नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

की

दुआएँ

संग्रहकर्ता

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

अनुवाद

मुहम्मद शमशाद ख़ां

विषय-सूची

वर्णानुक्रम-सूची

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

(अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है ।)

प्रस्तावना

इनसान सिर से पैर तक ख़ुदा का मुहताज है । यही मुहताजी उसकी अपनी पहचान और उसकी ख़ास सिफ़त भी है । इनसान को ख़ुदा ने बहुत कुछ दे रखा है । बहुत-सी इनायतें और मेहरबानियाँ उसपर हर वक़्त होती रहती हैं और बहुत कुछ इनसान को अपने रब से पाना बाक़ी भी रहता है । इनसान अपने वुजूद में भी ख़ुदा का मुहताज है और ज़िन्दगी के सफ़र में भी वह हमेशा इसका ज़रूरतमंद रहता है कि ख़ुदा की मदद उसके साथ रहे।

इस्लाम में दुआ को बुनियादी अहमियत दी गई है ।

हमारी दुआएँ इस एहसास को ज़िन्दा रखने में हमारी मददगार होती हैं कि हम ख़ुदा से बेपरवाह और बेनियाज़ नहीं हो सकते । हमारा ख़ुदा सुननेवाला, देखनेवाला और एक मेहरबान ख़ुदा है जो अपने बन्दों की हर क़िस्म की ज़रूरतों को पूरी कर सकता है । फिर हम उससे अपने लिए भलाई और ख़ैर की उम्मीद क्यों न रखें, उसे अपनी मुसीबतों में क्यों आवाज़ न दें और आराम व सुकून की हालत में हम उसके शुक्रगुज़ार क्यों न हों!

अपनी पुकार और अपनी दुआओं के ज़रिए से हम अपने रब से एक ऐसा रिश्ता और ताल्लुक़ क़ायम करते हैं जो कभी टूटेगा नहीं । ख़ुदा से बढ़कर किसी दूसरे से हमारा क़रीबी रिश्ता भी नहीं हो सकता । वह हमारा पैदा करनेवाला है, हम उसके पैदा किए हुए हैं । वह हमारा रब है हम उसके बन्दे हैं । वह हमारा हाकिम है, हम उसकी प्रजा हैं । इसलिए उसके आगे हाथ फैलाने में न कोई रुसवाई है और न यह हमारे लिए कोई ज़िल्लत की

बात है । क्या हम अपने हाथ और बाज़ू काम में लाने में कोई शर्म महसूस करते हैं? हरग़िज नहीं, ये हाथ और बाज़ू तो उसी के दिए हुए हैं । फिर ख़ुदा को शुऊरी तौर पर अपना हाजतरवा (ज़रूरत पूरी करनेवाला) बना लेने में और अपनी ज़रूरत पूरी कराने के लिए उससे दरख़्वास्त करने में झिझक से काम लेना बड़ी नादानी और नासमझी की बात होगी । उसकी चौखट का भिखारी बने रहने में ही हमारी इज़्ज़त और सम्मान है । उसे छोड़कर किसी और से उम्मीदें बाँधने और उसे अपना असल ज़रूरत पूरी करनेवाला और परेशानी दूर करनेवाला क़रार देने में ज़िन्दगी की रुसवाई भी है, और यह हमारी बेहिसी और नासमझी का खुला सुबूत भी होगा ।

कुरआन मजीद में इरशाद हुआ है —

يَآيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ۝ (فاطر: ١٥)

"ऐ लोगो! तुम ही अल्लाह के मुहताज हो,

अल्लाह तो ग़नी, तारीफ़ वाला है।''

(कुरआन, 35 : 15)

दूसरी जगह इरशाद हुआ है —

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ ________(النمل : ٦٢)

''(दूसरे बेहतर हैं) या वह (अल्लाह) जो बेक़रार की पुकार सुनता है जब वह उसे पुकारे?''

(कुरआन, 27 : 62)

कोई नहीं जो हक़ीक़त में बेचैन और परेशान हाल शख़्स की मदद कर सके। अल्लाह ही है जो अपने बन्दों की तकलीफ़ों को दूर करता है और मुसीबत में उनके काम आ सकता है।

अल्लाह के सामने अपनी ज़रूरतें रखकर बन्दा हक़ीक़त में इसका सुबूत देता है कि वह अल्लाह ही को अपना आक़ा, फ़रमाँरवा और हाजतरवा तसलीम करता है और उसी से उसकी सारी उम्मीदें जुड़ी रहती हैं। और

अल्लाह को यह बेहद महबूब और पसन्द है कि बन्दा उसी को पुकारे और हमेशा उससे ख़ैर का तालिब रहे। ख़ुदा को यह बात हरगिज़ पसन्द नहीं हो सकती और यह उसकी ग़ैरत के ख़िलाफ़ है कि उसका बन्दा ग़ैर से उम्मीदें लगाए और अपने रब से बेगाना बना रहे। ऐसी नासमझी और बेख़बरी उस इनसान को शोभा नहीं दे सकती जिसे ख़ुदा ने अक़्ल व समझ जैसी नेमत से नवाज़ा है। ख़ुदा की दी हुई अक़्ल व समझ से काम न लेना और जिहालत के अँधेरों में पड़े रहना एक ऐसा जुर्म है जिसे माफ़ नहीं किया जा सकता। अक़्ल व समझ से काम न लेकर इनसान ज़िन्दगी को उसके असल मानी व मक़सद से जुदा कर देता है। इसके नतीजे में वह एक ऐसे बड़े नुक़सान से दो-चार होता है जिसकी भरपाई किसी तरह मुमकिन नहीं।

ख़ुदा से माँगना और उसके सामने अपनी ज़रूरतें ले जाना हक़ीक़त में अपनी इनतिहाई दर्जे की बन्दगी का इज़्हार है। इनतिहाई बन्दगी के इज़्हार के आईने में हम

उस लतीफ़, लज़ीज़ व पुरकैफ़ (आनंददायक) तअल्लुक़ को नुमायाँ होते देख लेते हैं जो हमारे और हमारे ख़ुदा के बीच पाया जाता है। यही वजह है कि दुआओं से हमारे ज़ौक़े जमालियात (सौंदर्यप्रियता का मज़ा लेने की प्रवृति) को भी सबसे बढ़कर तसकीन हासिल होती है। दुआ की बुनियादी क़द्र व क़ीमत और उसकी अहमियत के पेशे नज़र प्यारे नबी *(सल्ल०)* ने इरशाद फ़रमाया—

اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ ۔ ________ (ترمذی، احمد، ابوداؤد، ابن ماجہ)

"दुआ ही इबादत है।" (तिरमिज़ी, अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

और आप *(सल्ल०)* ने फ़रमाया —

اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ ۔ ________ (ترمذی)

"दुआ इबादत का मग़्ज़ (मूल तत्त्व) है।"

(तिरमिज़ी)

दुआएँ अगर सिर्फ़ रस्मी न हों तो वे हमारे अच्छे

फ़िक्र व नज़र की अलामत हैं । दुआएँ हमें ख़ुदा से क़रीब करती हैं । उनके ज़रिए से हमें ख़ुदा से मुनाजात (प्रार्थना) और हमकलामी (बातचीत) का सौभाग्य प्राप्त होता है, जो अपने आपमें एक बड़ी नेमत है । बन्दे की ज़रूरतें कई तरह की होती हैं । यह भी उसकी ज़रूरत है कि भूख में उसे खाना नसीब हो, बीमारी में उसे तन्दुरुस्ती मिले और यह भी उसकी ज़रूरत है कि बेचारगी की हालत में उसका कोई सहारा हो । ख़तरे और ख़ौफ़ की हालत में उसके लिए कोई इतमिनान- बख़्श पनाहगाह हो । और यह भी उसकी ज़रूरत है कि उससे अगर ग़लतियाँ हो जाएँ या अगर उससे कोई गुनाह हो जाए तो कोई उसके पछतावे के आँसू और पशेमानी (पश्चाताप) पर माफ़ी और दरगुज़र से काम लेकर उसकी ख़ताओं और गुनाहों को माफ़ करके उसे पाक कर सके । फिर उसकी एक अहम ज़रूरत यह भी है कि उसे मान-सम्मान हासिल हो और आख़िरत में वह उन लोगों में शामिल हो सके जिनपर ख़ुदा की ख़ास मेहरबानियाँ

और इनायतें होने को हैं ।

और फिर बन्दे की यह भी एक ज़रूरत है और बड़ी ज़रूरत है कि वह अगर हक़ की तबलीग़ में मसरूफ़ है, ख़ुदा के बन्दों को दीन की दावत दे रहा है तो ख़ुदा उसके लिए आसानियाँ पैदा करे और दावत दी जानेवाली क़ौम के दिलों में हक़ के लिए जगह पैदा करे ।

अल्लाह के रसूल *(सल्ल०)* की माँगी हुई और आप *(सल्ल०)* की सिखाई हुई दुआओं को पढ़ने से बख़ूबी अन्दाज़ा किया जा सकता है कि हमारे दिल की क्या कैफ़ियत होनी चाहिए और हमें किस तरह बन्दगी के जज़्बे और ख़ुदा की मुहब्बत से अपने दिल को आबाद और रौशन रखना चाहिए ।

यहाँ दुआ के आदाब और उसके क़बूल होने के वक़्त वग़ैरह के बारे में कुछ बातें अर्ज़ कर देनी ज़रूरी मालूम होती हैं ।

दुआ के आदाब

(1) दुआ ईमान और इख़लास (निष्ठा) के साथ माँगी जाए ।

(2) गुनाहों से दूर रहने की पूरी कोशिश की जाए ।

(3) ख़ाना- पीना, पहनना वग़ैरह हलाल कमाई का हो ।

(4) ज़िना (व्यभिचार), शराबख़ोरी, झूठ, छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, घमण्ड, चुग़ली और ग़ीबत (परोक्ष निन्दा) जैसे बड़े गुनाहों से ख़ास तौर से बचा जाए ।

(5) रो-गिड़गिड़ाकर आजिज़ी के साथ दुआ करे ।

(6) अपने गुनाहों को तसलीम करते हुए ख़ुदा के सामने सच्चे दिल से तौबा करे ।

(7) बेहतर है कि वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़कर दुआ करे ।

(8) क़िबला की तरफ़ मुँह करके दुआ करे तो ज़्यादा बेहतर है ।

(9) अपनी हाजत पेश करने से पहले ख़ुदा की हम्द व सना (शुक्र व तारीफ़) करे और उसके रसूल *(सल्ल०)* पर दुरूद व सलाम भेजे ।

(10) दोनों हाथ उठाकर दुआ करे और दोनों हाथ की हथेली चेहरे के सामने रखे ।

(11) दुआ के बाद दोनों हाथों को चेहरे पर फेर ले ।

(12) दुआ और इसतिग़फ़ार (बख़्शिश चाहना) तीन बार करे ।

(13) रिश्तों को तोड़ने और गुनाह के लिए दुआ न हो ।

(14) दुआ में बेनियाज़ी और बेपरवाही का इज़हार न हो, यानी इस तरह दुआ न करे कि ख़ुदा अगर तू चाहे तो यह काम कर दे, तू चाहे तो रहम फ़रमा, बल्कि दुआ पूरे इरादे और तलब के साथ करे ।

(15) किसी अनहोनी बात की दरख़्वास्त न करे ।

(16) दुआ के क़बूल होने के लिए जल्दी न करे ।

(17) दुआ अगर अपनी ज़ाहिरी शक्ल में पूरी न हो तो

यह समझे कि इसमें भी कोई भलाई होगी। शायद अल्लाह किसी और शक्ल में मेरी दुआ क़बूल करेगा और दुआ माँगने का बदला तो बहरहाल मिलेगा।

दुआ के क़बूल होने का ख़ास वक़्त

(1) रात का पिछला पहर,

(2) जुमा की रात,

(3) जुमा के दिन, अस्र और सूरज डूबने के बीच,

(4) शबे क़द्र में,

(5) अज़ान के वक़्त,

(6) अज़ान और इक़ामत के बीच

(7) हय-य अ़लस्सलाह, हय-य अ़लल्फ़लाह के बाद,

(8) इक़ामत के वक़्त,

(9) जिहाद में सफ़बन्दी के वक़्त,

(10) फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद,

(11) सजदे की हालत में,

(12) क़ुरआन की तिलावत और ख़त्मे क़ुरआन के बाद,

(13) अरफ़ा के दिन यानी ज़िलहिज्जा की नौवीं तारीख को,

(14) रमज़ान में और रोज़ा इफ़्तार करने के वक़्त,

(15) बारिश के वक़्त बारिश में खड़े होकर दुआ करने पर,

(16) ज़मज़म का पानी पीते वक़्त, और

(17) नमाज़ में इमाम के ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम व लज़्ज़ाल्लीन के बाद 'आमीन' कहने पर, अगर फ़िरिश्तों की आमीन के साथ मेल हो गई तो गुनाह बख़्शे जाते हैं।

दुआ क़बूल होने की ख़ास जगहें

(1) बैतुल्लाह (ख़ाना काबा),

(2) मसजिदे नबवी,

(3) बैतुल मक़दिस (यरूशलम की इबादतगाह जिसकी बुनियाद हज़रत दाऊद *(अलै०)* ने डाली और हज़रत सुलैमान *(अलै०)* ने बनाई),

(4) काबा के अंदरूनी हिस्से में,

(5) ज़मज़म के कुएँ के पास,

(6) सफ़ा व मरवा की पहाड़ी के पास,

(7) जहाँ सई (मक्का की दो पहाड़ियों सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ना) की जाती है,

(8) अरफ़ात,

(9) मशअरुल हराम मुज़दलफ़ा,

(10) पहले जमरे और दूसरे जमरे के पास कंकड़ियाँ मारने के बाद ।

जिन लोगों की दुआएँ जल्द क़बूल होती हैं

(1) बेबस और सताया हुआ,

(2) मुसाफ़िर,

(3) बाप की दुआ,

(4) नेक और परहेज़गार औलाद की दुआ बाप के हक़ में,

(5) रोज़ेदार,

(6) इन्साफ़ करनेवाला हाकिम,

(7) ग़ैर मौजूद मुसलमान भाई के लिए दुआ करनेवाले,

(8) ताइब यानी गुनाहों से तौबा करनेवाले,

(9) रात में जागने के बाद —

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ.

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू लहुल- मुलकु व लहुल-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। अलहम्दु लिल्लाहि व सुबहानल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, व ला हौ-ल

व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अ़लीयिल अ़ज़ीम । अल्लाहुम- मग़फ़िरली

—पढ़कर दुआ करनेवाले की दुआ क़बूल होती है । नमाज़ पढ़े तो नमाज़ क़बूल होगी ।

तर्जुमा : ''अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, इक़तिदार व मुल्क उसी का है, हम्द उसी के लिए है और उसे हर चीज़ पर पूरी कुदरत हासिल है । सना व शुक्र अल्लाह के लिए है, अज़मतवाला है अल्लाह! और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह बड़ा है, और गुनाहों से रुके रहना और इताअत की ताक़त सिर्फ़ बरतर, अज़ीम अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से मुमकिन है । ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे ।''

(10) इस आयत को पढ़नेवाला:

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝

लाइला-ह इल्ला अन-त सुबहा-न-क इन्नी कुनतु मिनज़- ज़ालिमीन ।

''तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, क्या ही अज़मतवाला है तू, बेशक मैं कुसूरवार हूँ ।'' (कुरआन, 21:87)

(11) हज करनेवाला जब तक अपने घर वापस न आ जाए ।

दुआओं की इस किताब में मुन्तख़ब दुआएँ दी गई हैं । इंतिख़ाब में इसका ख़याल रखा गया है कि अहम और मुस्तनद दुआएँ इकट्ठा हो जाएँ, ताकि लोग आसानी के साथ इनको अपना मामूल बना लें । अगर सभी दुआओं को याद रखना मुमकिन न हो तो अपनी पसन्द और अपने हालात के पेशे नज़र जो दुआएँ आपको ज़्यादा पसन्द आएँ उनपर निशान लगा लें और फिर उनको याद कर लें । याद हो जाने के बाद इसे किसी अरबी जाननेवाले को ज़रूर सुनाकर इतमीनान कर लें ।

याद करते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि जिन दो अक्षरों के बीच में (-) का निशान लगा हो उन्हें मिला कर पढ़ें और जहाँ भी अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, के नीचे (.) का चिह्न लगा हो वह अरबी का 'ऐन' है जिसका सही उच्चारण करने के लिए आवाज़ हलक़ से निकालें । यदि आप दीन की सही समझ और शुऊर के साथ इन दुआओं को अपना मामूल बना लेते हैं तो बहुत जल्द इन्शाअल्लाह इन दुआओं का असर आप अपनी ज़िन्दगी में महसूस करेंगे ।

ख़ुदा से दुआ है कि वह इस किताब को क़बूल फ़रमाए और लोग ज़्यादा से ज़्यादा इससे फ़ायदा उठाएँ ।

— मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

अल्लाह के पाक नाम से

(1) اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ بِاسۡمِكَ الطَّاهِرِ الطَّيِّبِ الۡمُبَارَكِ
الۡاَحَبِّ اِلَيۡكَ الَّذِیۡ اِذَا دُعِيۡتَ بِهٖ اَجَبۡتَ وَاِذَا سُئِلۡتَ بِهٖ
اَعۡطَيۡتَ وَاِذَا اسۡتُرۡحِمۡتَ بِهٖ رَحِمۡتَ وَاِذَا اسۡتُفۡرِجۡتَ فَرَّجۡتَ.

(ابن ماجہ)

(1) अल्ला हुम-म इन्नी अस-अलु-क बिसमि-कत-ताहिरित- तय्यिबिल मुबा-रकिल अ-हब्बि इलैकल्लज़ी इज़ा दुई-त बिही अजब-त व इज़ा सुइल-त बिही अअ्तै-त व इज़स-तुरहिम-त बिही रहिम-त व इज़स तुफ़रिज-त फ़र्रज-त।

(इब्ने माजा)

"ऐ अल्लाह, तेरे पाक, उमदा, मुबारक नाम के ज़रिए से जो तुझे बहुत-ही महबूब है, मैं तुझसे दरख़्वास्त करता हूँ। उस नाम के ज़रिए से जिसके ज़रिए से जब तुझसे दुआ की जाती है तो तू क़बूल फ़रमाता है, और जब उसके ज़रिए से तुझसे सवाल किया जाता है तो तू अता करता है और जब उसके ज़रिए से तुझसे रहम की दरख़्वास्त की जाती है तो तू रहम फ़रमाता है और जब तुझसे निजात की दुआ की जाती है तो तू निजात बख़्शता है।"

इस्लामी ज़िन्दगी की तलब

(٢) اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَاشِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ اٰخِرَتِیَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ وَاجْعَلِ الْحَیَاةَ زِیَادَةً لِّیْ فِیْ كُلِّ خَیْرٍ وَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّیْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ ۔ (مسلم)

(2) अल्लाहुम-म असलिह-ली दीनिल्लज़ी हु-व

इसमतु अमरी व असलिह-ली दुनया-यल्लती फ़ीहा मआशी व असलिह ली आख़िर-रतिल- लती फ़ीहा मआदी वज-अ़लिल हया-त ज़िया-द-तल्ली फ़ी कुल्लि ख़ैरिवँ वजअ़लिल मौ-त रा-हतल-ली मिन कुल्लि शर्र । (मुसलिम)

"ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे दीन को दुरुस्त फ़रमा, जो हक़ीक़त में मेरे मामले और मेरे हालात की हिफ़ाज़त का दूसरा नाम है । और मेरे लिए मेरी दुनिया को दुरुस्त कर दे, जिसमें मेरी गुज़र-बसर होनी है । और मेरे लिए मेरी आख़िरत को दुरुस्त कर दे, जिसमें मुझे दोबारा उठना है । और हर भलाई के मामले में ज़िन्दगी को मेरे लिए ज़्यादा कर और मौत को मेरे लिए हर फ़साद से राहत पाने का ज़रिया बना ।"

٣ اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِىْ بِالْاِسْلَامِ قَآئِمًا وَّاحْفَظْنِىْ بِالْاِسْلَامِ قَاعِدًا وَّاحْفَظْنِىْ بِالْاِسْلَامِ رَاقِدًا وَّلَا تُشْمِتْ بِىْ عَدُوًّا وَّلَا حَاسِدًا.

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ مِنْ كُلِّ خَيْرٍ خَزَآئِنُهٗ بِيَدِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ كُلِّ شَرٍّ خَزَآئِنُهٗ بِيَدِكَ ۔ ______ (حاکم)

(3) अल्लाहुम-मह फ़ज़नी बिल इसलामि क़ाइमवँ वह-फ़ज़नी बिल इसलामि क़ाइदवँ वह-फ़ज़नी बिल इसलामि राक़िदवँ वला तुशमित बीअ़दु-ववँ वला हासिदन, अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क मिन कुल्लि ख़ैरिन ख़ज़ाइनुहू बियदि-क व अऊज़ुबि-क मिन कुल्लि शर्रिन ख़जाइनुहू बियदिक।

(हाकिम)

''ऐ अल्लाह! इस्लाम के वास्ते से, उठते, बैठते, सोते (हर हालत में) मेरी हिफ़ाज़त कर और किसी दुश्मन को मुझ पर हँसने का मौक़ा न दे और न किसी हसद (ईर्ष्या) करनेवाले को इसका मौक़ा दे। ऐ अल्लाह! मैं हर भलाई तुझसे माँगता हूँ जिसके ख़ज़ाने तेरे क़बज़े में हैं और मैं हर बुराई से बचने के लिए तेरी पनाह चाहता हूँ जिसके भण्डार तेरे कबज़े में हैं।''

﴿٤﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْـَٔلُكَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَالْعَزِيْمَةَ عَلَى الرُّشْدِ وَاَسْـَٔلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ وَاَسْـَٔلُكَ قَلْبًا سَلِيْمًا وَّلِسَانًا صَادِقًا وَّاَسْـَٔلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ. ــــــــــ (نسائی، احمد، ترمذی)

(4) अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-कस सबा-त फ़िल अमरि वलअज़ी-म-त अ-लर् रुशदि व अस-अलु-क शुक-र नेअ्-मति-क व हुस-न इबा-दति-क व अस-अलु-क क़लबन सलीमवँ व लिसा-नन सादिक़वँ व अस-अलु-क मिन ख़ैरि मा तअ्-ल-मु व अ ऊज़ु बि-क मिन शर्रि मा तअ्-ल-मु व अस-तग़फ़िरु-क लिमा तअ्-लमु ।

(नसई, अहमद, तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह! मैं तुझसे हक़ बातों पर जमने की तौफ़ीक़ माँगता हूँ और मैं तुझसे सीधे रास्ते पर डटे रहने

की दुआ माँगता हूँ और मैं तुझसे तेरी नेमत का शुक्र अदा करने और तेरे लिए बेहतर इबादत की तौफ़ीक़ चाहता हूँ, और तुझसे पाक व साफ़ दिल और सच बोलनेवाली ज़बान की दरख़्वास्त करता हूँ, और तुझसे उस भलाई की दरख़्वास्त करता हूँ जो तेरे इल्म में हो, और उस बुराई से बचने के लिए तेरी पनाह चाहता हूँ जिसे तू जानता है, और उस गुनाह से माफ़ी की तुझसे दरख़्वास्त है जो तेरे इल्म में हो।''

इल्म की तलब

٥ اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِيْ بِمَا عَلَّمْتَنِيْ وَعَلِّمْنِيْ مَا يَنْفَعُنِيْ وَزِدْنِيْ عِلْمًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ وَّاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ حَالِ اَهْلِ النَّارِ. ——— (ترمذی، ابن ماجہ)

(5) अल्लाहुम्मन फ़अ़नी बिमा अ़ल्लम-तनी व अ़ललिमनी मा यन-फ़उ़नी व ज़िदनी इलमन, अल्हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हा-लिवँ व अऊ़ज़ु बिल्लाहि

मिन हालि अहलिन्नार ।

(तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

"ऐ अल्लाह, ज़ो कुछ तूने मुझे इल्म बख़्शा है उसे तू मेरे लिए नफ़ाबख़्श बना दे और वह कुछ मुझे सिखा जिससे मुझे फ़ायदा पहुँचे, और मेरे इल्म में इज़ाफ़ा कर । अल्लाह की तारीफ़ हर हाल में है और मैं दोज़ख़वालों के हाल से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ ।"

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) की दुआ —

٦ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ عِلْمًا لَّا یُنْسٰی. ——— (مستدرک، حاکم)

(6) अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क इलमल ला युनसा । (मुसतदरक, हाकिम)

"ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ऐसा इल्म माँगता हूँ जिसे भुलाया न जा सके ।"

7 اَصْبَحْنَا عَلٰى فِطْرَةِ الْاِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْاِخْلَاصِ وَعَلٰى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰى مِلَّةِ اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ.

(احمد، نسائی ، الاذکار للنووی)

(7) अस बहना अ़ला फ़ित-र तिल इसलामि व कलि-मतिल इख़्लासि व-अ़ला दीनि नबिय्यिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल-ल-म व अ़ला मिल्लति अबीना इबराही-म हनी-फ़वँ व मा का-न मिनल मुशरिकीन ।

(अहमद, नसई, अलअज़कार **लिन्नव्वी**)

''हमने सुबह की इस्लाम की फ़ितरत और इख़्लास के कलिमे पर और अपने नबी हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* के दीन पर और अपने बाप इबराहीम *(अलै०)* की मिल्लत पर जो ख़ुदा के लिए यकसू हो गए थे और वे मुशरिकीन में

से न थे।''

٨ اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ ـــــــــــــ (ترمذی، ابن ماجہ، ابوداؤد)

(8) अल्लाहुम्-म बि-क अमसैना व बि-क अस-बहना व बि-क नहया व बि-क नमूतु व इलैकन नुशूर।

(तिरमिज़ी, इब्ने माजा, अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह! हमने तेरे ही सहारे शाम की, और तेरे ही सहारे सुबह की, और तेरे ही करम से जीते हैं और तेरे ही हुक्म से मरते हैं, और तेरी ही तरफ़ दोबारा ज़िन्दा होकर जाना है।''

सुबह और शाम तीन बार पढ़िए —

٩ بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ـــــ (ترمذی، ابوداؤد، ابن ماجہ، نسائی)

(9) बिसमिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर-रु मअ़ इसमिही शैउन फ़िल अरज़ि व ला फ़िस्समाइ व हुवस-समीउ़ल अ़लीम ।

(तिरमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, नसई)

''अल्लाह के नाम से जिसके नाम के साथ कोई चीज़ न तो ज़मीन में नुक़सान पहुँचाती है और न आसमान में, और वह सुनता, जानता है ।''

١٠ اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. رَبِّ اَسْئَلُكَ خَيْرَ مَا فِىْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَاَعُوْذُ بِكَ الْكَسَلِ وَمِنْ سُوْءِ الْكِبَرِ وَالْكُفْرِ، رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِى النَّارِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ .

(بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی)

(10) अमसै-ना व अमसल मुल्कु लिल्लाहि

वल्हम्दु लिल्लाहि ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-द-हू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हमदु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर । रब्बि अस-अलु-क ख़ै-र माफ़ी हाज़िहिल लै-लति व ख़ै-र मा बअ़-दहा, व अऊ़ज़ु बि-क मिन शर्रिहा व शर्रि माफ़ीहा व अऊ़ज़ु बि-क मिनल क-स-लि व मिन सू-इल कि-ब-रि वल कुफ़्रि, रब्बि अऊ़ज़ु बि-क मिन अ़ज़ाबिन फ़िन्नारि व अ़ज़ाबिल क़ब्र ।

(बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

''हमने और तमाम मुल्क ने अल्लाह के लिए शाम की, और सारी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है । अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं । वह अकेला है । उसका कोई शरीक नहीं । उसी की सल्तनत है और उसी के लिए तारीफ़ है और उसे हर चीज़ पर कुदरत हासिल है । ऐ रब मैं तुझसे इस रात की भलाई और इसके बाद की भलाई तलब करता हूँ और इस रात की बुराई और इसके

बाद की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ । ऐ रब! मैं सुस्ती, काहिली और बुढ़ापे की ख़राबी और बुरी हालत और नाशुक्री से बचने के लिए तेरी पनाह चाहता हूँ । ऐ रब, मैं दोज़ख़ के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से बचने के लिए तेरी पनाह चाहता हूँ ।''

(11) اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَاَهْلِيْ وَمَالِيْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ وَاٰمِنْ رَوْعَاتِيْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِيْ وَعَنْ يَّمِيْنِيْ وَعَنْ شِمَالِيْ وَمِنْ فَوْقِيْ وَمِنْ تَحْتِيْ وَاَعُوْذُ بِكَ بِعَظْمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ. (احمد، ابوداؤد)

(11) अल्लाहुम-इन्नी अस-अलुकल आ़फ़ि-य-त फ़िद्दुनया वल आख़िरह । अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलुकल-अ़फ़-व वल- आ़फ़ि-य-त फ़ी दीनी व दुनया-य व अहली व माली । अल्ला- हुम्मस्तुर अ़वराती व आमिन रौ आ़ती, अल्लाहुम्मह-फ़ज़नी

मिमबैनि यदै-य व मिन ख़लफ़ी व अयँ-यमीनी व अन शिमाली व मिन फ़ौक़ी व मिन तहती व अऊज़ु बि-क बि-अज़मति-क अन उग़ाता-ल मिन तहती ।

(अहमद, अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे दुनिया व आख़िरत में आफ़ियत और सलामती की दरख़्वास्त करता हूँ । ऐ अल्लाह, मैं तुझसे माफ़ी का तलबगार हूँ और अपने दीन, अपनी दुनिया और अपने घरवालों और अपने माल में सलामती का तालिब हूँ । ऐ अल्लाह, मेरे ऐबों और कमियों को छुपा और मुझे अपने अन्देशों से महफ़ूज़ कर दे । ऐ अल्लाह, तू मेरी हिफ़ाज़त कर । मेरे सामने से और मेरे पीछे से, मेरे दाएँ से और मेरे बाएँ से, और मेरे ऊपर से और मेरे नीचे से, और मैं तेरी अज़मत और बड़ाई की पनाह चाहता हूँ इस बात से कि मैं अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ ।''

۱۲ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ فَاَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ
وَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ . ——— (نسائی، الاذکار للنووی)

(12) या हय्यु या क़य्यूमु बि रह-मति-क अस तग़ीसु फ़- असलिहली शानी कुल्लहु वला तकिलनी इला नफ़सी तर-फ़-त ऐनी।

(नसई, अल अज़कार लिन्नव्वी)

''ऐ हमेशा ज़िन्दा रहनेवाले, ऐ कायनाते हस्ती का इंतिज़ाम सँभालने वाले, तेरी रहमत के वास्ते से मैं फ़रियाद करता हूँ, तो तू मेरे तमाम मामलात को दुरुस्त कर दे, और मुझे एक लम्हे के लिए भी मेरे नफ़्स के हवाले न कर।''

۱۳ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ صِحَّةً فِيْ اِيْمَانٍ وَّاِيْمَانًا فِيْ حُسْنِ
خُلُقٍ وَّنَجَاةً يَّتْبَعُهَا فَلَاحٌ وَّرَحْمَةً مِّنْكَ وَعَافِيَةً وَّمَغْفِرَةً مِّنْكَ
وَرِضْوَانًا . ——— (احمد، طبرانی فی الاوسط)

(13) अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क सिह-हतन फ़ी ईमानिवँ व ईमानन फ़ी हुसनि ख़ुलुक़िवँ व नजातयँ

यत-बड़हा फ़लाहुवँ व रह-म-तम मिन-क वआ-फ़ियतवँ व मग़फ़ि-र-तम मिन-क व रिज़वाना।

(अहमद, तबरानी फ़िल अवसत)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे ईमान के साथ तन्दुरुस्ती और हुसने अख़लाक़ के साथ ईमान की दरख़्वास्त करता हूँ, और ऐसी निजात जिसके आगे कामयाबी हो और तेरी तरफ़ से रहमत व आफ़ीयत और तेरी बख़शिश और ख़ुशी का तालिब हूँ।''

١٤ اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ. ـــــــــ (ابو داؤد)

(14) अल्लाहुम-म आफ़िनी फ़ी ब-दनी। अल्लाहुम-म आफ़िनी फ़ी समई। अल्लाहुम-म आफ़िनी फ़ी बसरी ला इला-ह इल्ला अन-त।

(अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह, मुझे जिसमानी आफ़ीयत अता कर,

ऐ अल्लाह तू मुझे मेरी समाअत (सुनने की ताक़त) में सलामती अता कर और मुझे मेरी बसारत (आँख की रौशनी) में सलामती अता कर । तेरे सिवा कोई माबूद नहीं ।''

रात में सोते वक़्त

١٥ بِسْمِ اللّٰهِ وَضَعْتُ جَنْبِیْ لِلّٰهِ. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ ذَنْبِیْ وَاخْسَأْ شَیْطَانِیْ وَفُكَّ رِهَانِیْ وَاجْعَلْنِیْ فِی النَّدِیِّ الْاَعْلٰی. ——(ابوداؤد)

(15) बिसमिल्लाहि व ज़अ़तु जम्बी लिल्लाहि । अल्लाहुम- मग़फ़िर ज़म्बी वख़सा शैतानी व फुक-क रिहानी वज-अ़लनी फ़िन-नदीयिल अअ़्ला ।

(अबू दाऊद)

''अल्लाह के नाम से अल्लाह के लिए अपना पहलू (बिस्तर पर) रखता हूँ । ऐ अल्लाह, तू मेरे गुनाह माफ़ कर दे और मेरे शैतान को बेइज़्ज़त व रुसवा कर दे, और

मेरी गर्दन छुड़ा दे और बुलंद मजलिसवालों में मुझे भी शामिल कर दे ।''

⑯ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَكَلِمَاتِكَ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا أَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ، اَللّٰهُمَّ أَنْتَ تَكْشِفُ الْمَغْرَمَ وَالْمَأْثَمَ، اَللّٰهُمَّ لَا يُهْزَمُ جُنْدُكَ وَلَا يُخْلَفُ وَعْدُكَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ. ———— (ابو داؤد)

(16) अल्लाहुम-म इन्नी अऊ़ज़ु बि-क बि- वजहिकल करीमि व कलिमाति-कत-ताम-माति मिन शर्रि मा अन-त आख़िज़ुम बिना-सि-य-तिह । अल्लाहुम-म अन-त तकशिफ़ुल मग़-र-म वल मा-स-म । अल्ला-हुम-म ला युह-ज़-मु जुनदु-क व ला युख़-लफ़ु वअ़दु-क वला यन-फ़उ ज़ल जद्‌दि मिन-कल जद्‌दु सुबहा-न-क व बि-हमदि-क । (अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह, मैं तेरे रुख़े मुकर्रम और तेरे जारी

होनेवाले कलिमात के ज़रीये से उन चीज़ों की बुराई से तुझसे पनाह चाहता हूँ जिनकी पेशानी तेरी पकड़ में है। ऐ अल्लाह, तू ही क़र्ज़ और गुनाह को दूर करता है। ऐ अल्लाह, तेरे लश्कर को कभी शिकस्त नहीं और तेरा वादा ख़िलाफ़ नहीं होता और दौलतमंद को उसकी दौलतमंदी कभी तेरे मुक़ाबले में काम नहीं आ सकती। तू क्या ही अज़ीम है और तेरे ही लिए है सब तारीफ़।''

١٧ اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى. (بخاری، مسلم)

(17) अल्लाहुम-म बिसमि-क अमूतु व अह-या।

(बुख़ारी, मुसलिम)

''ऐ अल्लाह, मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और जीता हूँ।''

١٨ بِاسْمِكَ رَبِّىْ وَضَعْتُ جَنْبِىْ وَبِكَ اَرْفَعُهٗ اِنْ اَمْسَكْتَ نَفْسِىْ فَارْحَمْهَا وَاِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصّٰلِحِيْنَ.

(بخاری، مسلم، ابوداؤد)

(18) बिसमि-क रब्बी व ज़अ़तु जम्बी व बि-क अर-फ़-उ़हू इन अमसक-त नफ़्सी फ़र हमहा व इन अरसल-तहा फ़हफ़ज़हा बिमा तह- फ़-ज़ु बिही इबा-द-कस-सालिहीन।

(बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद)

''ऐ रब, मैं तेरे ही नाम से अपना पहलू (बिस्तर पर) रखता हूँ और उसे उठाता हूँ । अगर तू मेरी जान को रोक ले तो उसपर रहम करना और उसे छोड़ दे तो उसकी उसी तरह हिफ़ाज़त करना जिस तरह तू अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त करता है ।''

(19) اَللّٰهُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِيْ اِلَيْكَ وَوَجَّهْتُ وَجْهِيْ اِلَيْكَ وَ فَوَّضْتُ اَمْرِيْ اِلَيْكَ وَاَلْجَاْتُ ظَهْرِيْ اِلَيْكَ رَغْبَةً وَّرَهْبَةً اِلَيْكَ لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجٰى مِنْكَ اِلَّا اِلَيْكَ، اٰمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِيْ اَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِيْ اَرْسَلْتَ ۔ ـــــــــ (مسلم، بخاری، ابوداؤد)

(19) अल्लाहुम-म असलम-तु नफ़्सी इलै-क व

वज्जहतु वजही इलै-क व फ़व-वज़तु अमरी इलै-क वल जातु ज़हरी इलै-क रग़-ब-तवँ व रह-ब-तन इलै-क ला मल-ज-अ व ला मनजा मिन-क इल्ला इलै-क। आ-मन-तु बिकिताबि-कल्लज़ी अनज़ल-त व बि-नबीयि-कल्लज़ी अरसल-त ।

(मुसलिम, बुख़ारी, अबू दाऊद)

"ऐ अल्लाह, मैंने अपनी जान तेरे सुपुर्द कर दी और अपने मुँह को तेरी ओर किया और अपना मामला तुझे सौंप दिया, तुझे अपना मददगार बनाया, इस हाल में कि तेरी तरफ़ झुका हुआ और तेरे ख़ौफ़ से काँप रहा हूँ। तुझसे हटकर न कोई ठिकाना है और न निजात की कोई जगह ही, अगर है तो बस तेरे ही पास। मैं तेरी उस किताब पर ईमान ले आया जो तूने नाज़िल की है और तेरे उस नबी पर भी जिसको तूने भेजा है।"

रात में आँख खुलने पर

(٢٠) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا
وَّعَنْ يَّمِيْنِيْ نُوْرًا وَّعَنْ شِمَالِيْ نُوْرًا وَّمِنْ بَيْنِ يَدَيَّ نُوْرًا وَّمِنْ
خَلْفِيْ نُوْرًا وَّمِنْ فَوْقِيْ نُوْرًا وَّمِنْ تَحْتِيْ نُوْرًا وَّاَعْظِمْ لِيْ نُوْرًا يَّوْمَ
الْقِيٰمَةِ۔ (مسلم، بخاری، نسائی)

(20) अल्लाहुम-मजअ़ल फ़ी क़लबी नू-रवँ व फ़ी समई नू-रवँ व फ़ी ब-स-री नूरवँ व अ़इं-यमीनी नू-रवँ वअ़न शिमाली नू-रवँ व मिम्बैनि य-दय-य नू-रवँ व मिन ख़लफ़ी नू-रवँ व मिन फ़ौक़ी नू-रवँ व मिन तहती नू-रवँ व अअ़ज़िम ली नू-रयँ-यौमल क़ियामह। (मुसलिम, बुख़ारी, नसई)

''ऐ अल्लाह, मेरे दिल में नूर पैदा कर, और मेरे कान और मेरी आँख में नूर डाल दे, और मेरी दाईं ओर नूर और मेरी बाईं ओर नूर कर दे, और मेरे आगे और

मेरे पीछे भी नूर कर दे और मेरे ऊपर नूर कर दे और मेरे नीचे नूर कर दे और क़ियामत के रोज़ मेरे नूर को ख़ूब बढ़ा दे ।''

सोकर उठने पर

(٢١) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ.

(بخاری، ابو داؤد)

(21) अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअ-दमा अमा-त-ना व इलैहिन-नुशूर ।

(बुख़ारी, अबू दाऊद)

''सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिसने हमें मौत देने के बाद ज़िन्दा किया और आख़िरकार उसी की तरफ़ जाना है ।''

(٢٢) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ رَدَّ عَلَیَّ رُوْحِیْ وَعَافَانِیْ فِیْ جَسَدِیْ وَاَذِنَ لِیْ بِذِکْرِهٖ.

(ترمذی، نسائی)

(22) अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी रद्-द अ़लय-य रूही व आफ़ानी फ़ी ज-स-दी व अज़ि-न ली बिज़िकरिही। (तिरमिज़ी, नसई)

''सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने मेरी रूह को लौटा दिया और जिसमानी तौर पर मुझे सलामती बख़्शी और अपने ज़िक्र की मुझे इज़ाज़त अता की।''

٢٣ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ النَّوْمَ وَالْیَقْظَةَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بَعَثَنِیْ سَالِمًا سَوِیًّا اَشْهَدُ اَنَّ اللّٰهَ یُحْیِ الْمَوْتٰی وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۔ (الاذکار للنووی)

(23) अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़न्नौ-म वल यक़्-ज़-त अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ब-अ़-स-नी सालिमन सविय्यन अशहदु अन्नल्ला-ह युहयिल मौता व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।

(अल अज़्कार लिन्नववी)

''तारीफ़ है अल्लाह की जिसने नींद और बेदारी को

पैदा किया। तारीफ़ है अल्लाह की जिसने मुझे सही सालिम उठाया। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और उसे हर चीज़ पर कुदरत हासिल है।''

(٢٤) لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ. (بخاری، ترمذی، احمد، ابن ماجہ)

(24) ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। व सुबहानल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर। वला हौ-ल वला कुव-व-त इल्ला बिल्लाहि, अल्लाहुम्मग़-फ़िरली।

(बुख़ारी, तिरमिज़ी, अहमद, इब्ने माज़ा)

''अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की है बादशाही और उसी के लिए सारी तारीफ़ें और शुक्र है और वह हर चीज़

पर कुदरत रखता है । और अल्लाह बड़ाईवाला है और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह ही बड़ा है । और एक हालत का दूसरी हालत में बदलना और ताक़त का हासिल होना ख़ुदा की मदद के बग़ैर मुमकिन नहीं । ऐ अल्लाह, मुझे बख़्श दे ।''

इबादतों के मौक़ों पर

ग़ुस्ल, वुज़ू और तयम्मुम की दुआ

٢٥ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَوَسِّعْ لِيْ فِيْ دَارِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ
رِزْقِيْ۔ ________________ (نسائی)

(25) अल्लाहुम्मग़-फ़िरली ज़म्बी व वस्सिअ़ ली फ़ी दारी व बारिक ली फ़ी रिज़क़ी। (नसई)

"ऐ अल्लाह, तू मेरे गुनाह को माफ़ कर दे और मेरे घर में ख़ुशहाली और कुशादगी अता कर और मेरी रोज़ी में बरकत दे।"

ग़ुस्ल, वुज़ू और तयम्मुम करने के बाद की दुआ

٢٦ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ

مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ. ________________________ (مسلم)

(26) अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू व अश-हदु अन-न मुहम्मदन अ़बदुहू व रसूलुहू अल्ला हुम्मज-अ़लनी मिनत-तव्वाबी-न वजअ़लनी मिनल मु-त-तह-हिरीन। (मुसलिम)

''मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं । और मैं इसकी गवाही देता हूँ कि मुहम्मद *(सल्ल०)* उसके बन्दे और उसके रसूल हैं । ऐ ख़ुदा, तू मुझे तौबा करनेवालों और ख़ूब पाकीज़गी इख़तियार करनेवालों में शामिल कर ।''

मसजिद की तरफ़ रुख़ करते वक़्त

(27) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّعَنْ يَّمِيْنِيْ نُوْرًا وَّعَنْ يَّسَارِيْ نُوْرًا وَّفَوْقِيْ نُوْرًا وَّتَحْتِيْ نُوْرًا وَّاَمَامِيْ

نُوْرًا وَّخَلْفِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّيْ نُوْرًا وَّفِيْ لِسَانِيْ نُوْرًا وَّفِيْ عَصَبِيْ نُوْرًا
وَّلَحْمِيْ نُوْرًا وَّدَمِيْ نُوْرًا وَّ شَعْرِيْ نُوْرًا وَّ بَشَرِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِيْ
نَفْسِيْ نُوْرًا وَّاَعْظِمْ لِيْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ نُوْرًا۔ ——— (مسلم)

(27) अल्लाहुम्मज अ़ल फ़ी क़लबी नू-रवँ व फ़ी ब-स-री नू-रवँ व फ़ी समई नू-रवँ व अ़यँ-यमीनी नू-रवँ व अ़यँ-यसारी नू-रवँ व फ़ौक़ी नू-रवँ व तहती नू-रवँ व अमामी नू-रवँ व ख़लफ़ी नू-रवँ वज-अ़ल्ली नू-रवँ व फ़ी लिसानी नू-रवँ व फ़ी अ़-स-बी नू-रवँ व लहमी नू-रवँ व दमी नू-रवँ व शअ़री नू-रवँ व ब-श-री नू-रवँ वज-अ़ल फ़ी नफ़्सी नूरन व अअ़ज़िम ली नूरा। अल्लाहुम-म अअ़तिनी नूरा। (मुसलिम)

''ऐ अल्लाह, मेरे दिल में नूर पैदा कर और मेरी आँखों में नूर, मेरे कान में नूर, मेरी दाहिनी ओर नूर, मेरी बाईं ओर नूर, मेरे ऊपर नूर, मेरे नीचे नूर, मेरे आगे नूर,

मेरे पीछे नूर पैदा कर। और मेरे लिए नूर ही नूर कर दे। और मेरी ज़बान में नूर, मेरे पुट्ठों में नूर, मेरे गोश्त में नूर, मेरे ख़ून में नूर, मेरे बालों में नूर, मेरी खाल में नूर और मेरी जान में नूर पैदा कर दे और मेरे नूर को बढ़ा दे और मुझे नूर ही नूर अता कर।''

अज़ान सुनकर

٢٨ اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَانِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَانِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ. ——— (بخاری، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، احمد)

(28) अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद-दअ़वतित ताम्मति वस- सलातिल क़ाइमति आति मुहम्म-द-निल वसी-ल-त वल फ़ज़ी-ल-त वब-अ़स-हु मक़ामम महमू-द निल-लज़ी व अ़त-त-हू।

(बुख़ारी, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, नसई, अहमद)

''ऐ अल्लाह, ऐ इस कामिल दावत और क़ायम

होनेवाली नमाज़ के रब, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को वसीला और फ़ज़ीलत अता कर, और उन्हें मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ कर, जिसका तूने उनसे वादा किया है ।''

नमाज़ में तशह्हुद और दुरूद के बाद

٢٩ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَفِتْنَةِ الْمَمَاتِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ. (بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی)

(29) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन अज़ाबिल क़बरि व अऊज़ु बि-क मिन फ़ित-नतिल मसीहिद-दज्जालि व अऊज़ु बि-क मिन फ़ित-नतिल महया व फ़ित-नतिल ममाति । अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल मअ-समि वल मग़-रम ।

(बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद, नसई)

"ऐ ख़ुदा, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ क़ब्र के अज़ाब से, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ दज्जाल के फ़ितने से, और तेरी पनाह चाहता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से । ऐ ख़ुदा, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ गुनाह व क़र्ज़ से ।"

۳۰ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ. ———— (بخاری مسلم، ترمذی، نسائی، احمد، ابن ماجہ)

(30) अल्लाहुम-म इन्नी ज़-लमतु नफ़्सी ज़ुलमन कसीरवँ व ला यग़फ़िरुज़-ज़ुनू-ब इल्ला अन-त फ़ग़फ़िरली मग़फ़ि-र-तम मिन इनदि-क वर-हमनी इन्न-क अनतल ग़फ़ूरुर-रहीम ।

(बुख़ारी, मुसलिम, तिरमिज़ी, नसई, अहमद, इब्ने माजा)

"ऐ अल्लाह, यक़ीनन मैंने अपने आप पर बहुत ज़ुल्म किया है और तेरे सिवा कोई नहीं जो गुनाहों को बख़्शे । तो तू अपनी ओर से मेरी मग़फ़िरत कर और

मुझपर रहम कर । यक़ीनन तू बड़ा बख्शनेवाला, निहायत रहम फ़रमानेवाला है ।''

(٣١) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ . (مسلم)

(31) अल्लाहुम-मग़फ़िरली मा क़द्-दमतु व मा अख़्ख़रतु व मा अस-रर-तु व मा अअ़लनतु व मा अस-रफ़तु व मा अन-त अअ़-ल-मु बिही मिन्नी अनतल मुक़द्दिमु व अनतल मु-अख़्ख़िरु ला इला-ह-इल्ला अन-त । (मुसलिम, तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह तू उन गुनाहों को माफ़ फ़रमा जो मैंने पहले किए और बाद में किए और छुपाकर किए और खुले तौर पर किए और जो ज़्यादती मुझसे हुई और जिसको तू मुझसे ज़्यादा जानता है । तू ही आगे करनेवाला है और तू ही पीछे करनेवाला है । तेरे सिवा कोई माबूद नहीं ।''

सलाम फेरने के बाद

(٣٢) رَبِّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ .

(ابوداؤد، نسائی، احمد)

(32) रब्बि अइन्नी अ़ला ज़िकरि-क व शुकरि-क व हुसनि इबादति-क ।

(अबू दाऊद, नसई, अहमद)

''ऐ रब, मेरी मदद कर तू अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत के सिलसिले में ।''

(٣٣) اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ.

(مسلم، ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ، احمد)

(33) अल्लाहुम-म अनतस-सलामु व मिनकस-सलामु तबा-रक-त या ज़ल-जलालि वल इकराम ।

(मुसलिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, अहमद)

''ऐ अल्लाह, तू सरापा अमन और सलामती है और तुझ ही से अमन और सलामती का फैज़ान है, बरकतवाला है तू— ऐ अज़मत और नवाज़नेवाले।''

٣٤ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَآءُ الْحَسَنُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ. ——— (مسلم، ابوداؤد، نسائی، احمد)

(34) ला-इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर । ला-हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि ला-इला-ह इल्लल्लाहु व ला नअ़बुदु इल्ला इय्याहु लहुन नेअ़मतु व लहुल फ़ज़लु व लहुस सनाउल ह-स-नु ला-इला-ह इल्लल्लाहु मुख़लिसी-न लहुद्-दी-न व लव् करिहल काफ़िरून ।

(मुसलिम, अबू दाऊद, नसई, अहमद)

''नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के जो अकेला है, जिसका कोई शरीक नहीं । उसी के लिए बादशाही है

और उसी के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है । एक हालत का दूसरी हालत में बदलना और उसकी ताक़त का हासिल होना ख़ुदा की मदद के बग़ैर मुमकिन नहीं । अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हम उसी की इबादत करते हैं । उसी की नेमत है और उसी का फ़ज़्ल और अच्छी तारीफ़ है । अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं । हमने उसी के लिए दीन को ख़ालिस कर लिया चाहे इनकार करनेवालों (काफ़िरों) को यह नापसन्द ही क्यों न हो ।''

(٣٥) اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْیَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ. ـــــــــ ابوداؤد، نسائی، احمد

(35) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल बुख़लि व अऊज़ु बि-क मिनल जुबनि व अऊज़ु बि-क मिन अर-ज़लिल उ़मुरि व अऊज़ु बि-क मिन

फ़ित-नतिद-दुनया व अज़ाबिल क़ब्र।

(अबू दाऊद, नसई, अहमद)

"ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बुख़्ल (लालच व कंजूसी) से, और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बुज़दिली से और तेरी पनाह चाहता हूँ नाकारा उम्र से और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ दुनिया के फ़ितने और क़ब्र के अज़ाब से।"

(٣٦) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ خَطَئِیْ وَعَمَدِیْ، اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَالْاَخْلَاقِ لَا یَهْدِیْ لِصَالِحِهَا وَلَا یَصْرِفُ سَیِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْیَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ الْمَسِیْحِ الدَّجَّالِ۔ (مسلم)

(36) अल्लाहुम-मग़फ़िरली ख़-त-ई व अ़म-दी अल्लाहुम-मह-दिनी लिसालिहिल अअ़्मालि वल-अख़्लाक़ि ला यहदी लिसालिहिहा व ला यसरिफ़ु

सय्यिअहा इल्ला अन-त । अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन अज़ाबिन-नारि व अज़ाबिल- क़बरि व मिन फ़ित-नतिल महया वल ममाति व मिन शर-रिल मसीहिद-दज्जाल । **(मुसलिम)**

''ऐ अल्लाह, तू मेरी जाने-अनजाने में की गई ख़ताओं को बख़्श दे । ऐ अल्लाह, तू मुझे नेक अमल और अच्छे अख़लाक़ की हिदायत दे । तेरे सिवा कोई नहीं जो नेक कामों की रहनुमाई करे और बुराइयों से फेर सके । ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ आग के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से और ज़िन्दगी व मौत के फ़ितने और मसीह दज्जाल की बुराई से ।''

۳۴ رَبِّ اَعِنِّیْ وَلَا تُعِنْ عَلَیَّ وَانْصُرْنِیْ وَلَا تَنْصُرْ عَلَیَّ وَامْکُرْ لِیْ
وَلَا تَمْکُرْ عَلَیَّ وَاهْدِنِیْ وَیَسِّرِ الْهُدٰی لِیْ وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ بَغٰی
عَلَیَّ رَبِّ اجْعَلْنِیْ لَکَ شَاکِرًا لَّکَ ذٰکِرًا لَّکَ رَاهِبًا لَّکَ مِطْوَاعًا
لَّکَ مُخْبِتًا اِلَیْکَ اَوَّاهًا مُّنِیْبًا رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِیْ وَاغْسِلْ حَوْبَتِیْ

وَاجِبْ دَعْوَتِيْ وَثَبِّتْ حُجَّتِيْ وَسَدِّدْ لِسَانِيْ وَاهْدِ قَلْبِيْ
وَاسْلُلْ سَخِيْمَةَ صَدْرِيْ . ______ (ترمذی، ابوداؤد، ابن ماجہ)

(37) रब्बि अ-इन्नी व ला तुइन अ-लय-य वनसुरनी व ला तनसुर अलय-य वमकुरली व ला तमकुर अलय-य वहदिनी व यस्सिरिल हुदा ली वनसुरनी अला मम बग़ा अलय-य रब्बिज अलनी ल-क शाकिरल ल-क ज़िक-रल-ल-क राहिबल-ल-क मितवा अल- ल-क मुख़बितन इलै-क अव-वहम-मुनीबा, रब्बि तक़ब्बल तौबती वग़-सिल हौबती व अजिब दअ़वती व सब्बित हुज्जति व सद-दिद लिसानी वहदि क़लबी वसलुल सख़ी-म-त सदरी।

(तिरमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

"ऐ रब, तू मेरी मदद कर और मेरे ख़िलाफ़ मदद न कर। और मुझे ग़ालिब कर और मग़लूब (पराजित) मत कर और मेरे हक़ में अपनी तदबीर कर, मेरे ख़िलाफ़ तदबीर न कर। मुझे हिदायत दे और हिदायत को मेरे

लिए आसान कर और जो मुझपर ज़ुल्म करते हैं तो उनके मुक़ाबले में मेरी मदद कर । ऐ रब, तू मुझे अपना शुक्रगुज़ार और ज़िक्र करनेवाला बना । और बना मुझे ऐसा कि मैं तुझसे डरनेवाला, तेरा हुक्म माननेवाला, तेरे आगे गिड़गिड़ानेवाला और आजिज़ी के साथ रुजू करनेवाला हो जाऊँ । मेरे रब, मेरी तौबा क़बूल कर, मेरे गुनाह धो और मेरी दुआ क़बूल कर । मेरी दलील को साबित रख, मेरी ज़बान सीधी रख और मेरे दिल की रहनुमाई फ़रमा और मेरे सीना के कीने (हसद-कपट) को निकाल दे ।''

(٣٨) اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِيْ بِمَا عَلَّمْتَنِيْ وَعَلِّمْنِيْ مَا يَنْفَعُنِيْ وَزِدْنِيْ عِلْمًا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ وَّاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ حَالِ اَهْلِ النَّارِ. ——————— (ترمذی، ابن ماجہ)

(38) अल्लाहुम्-मन फ़-अ-नी बिमा अ़ल्लम-तनी व अ़ल- लिमनी मा यन-फ़-उनी व ज़िदनी इलमन, अलहम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिवँ व

अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिन हालि अहलिन-नार ।

(तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

"ऐ अल्लाह, तूने मुझे जो कुछ सिखाया है उसे मेरे लिए फ़ायदेमंद बना और मुझे वह कुछ सिखा जो मेरे लिए फ़ायदेमंद साबित हो और मेरे इल्म में इज़ाफ़ा कर। तारीफ़ अल्लाह ही की है हर हाल में और मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ जहन्नमवालों के हाल से बचने के लिए।"

٣٩ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِىْ مِنَ النِّفَاقِ وَعَمَلِىْ مِنَ الرِّيَآءِ وَلِسَانِىْ مِنَ الْكَذِبِ وَعَيْنِىْ مِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ سَرِيْرَتِىْ خَيْرًا مِّنْ عَلَانِيَتِىْ وَاجْعَلْ عَلَانِيَتِىْ صَالِحَةً، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ صَالِحِ مَا تُؤْتِى النَّاسَ مِنَ الْاَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ غَيْرِ الضَّآلِّ وَالْمُضِلِّ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ، وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. ——— (بیہقی، ترمذی)

(39) अल्लाहुम-म तह-हिर क़लबी मिनन-निफ़ाक़ि व अ़-म-ली मिनर रियाइ व लिसानी मिनल कज़िबि व ऐ़नी मिनल ख़ियानति फ़इन-न-क तअ़-ल-मु ख़ाई-न-तल अअ़युनि व मा तुख़फ़िस सुदूर, अल्ला- हुम-मजअ़ल सरी-र-ती ख़ैरम-मिन अ़लानियती वज-अ़ल अ़लानियती सालि-ह-तन, अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क मिन सालिहिम मातू-तिन ना-स मिनल अहलि वलमालि वल व-ल-दि ग़ैरिज़-ज़ाल्लि वल मुज़िललि सुबहा-न रब्बि-क रब्बिल इज़्ज़ति अ़म्मा यसिफू-न, व सलामुन अ़-लल मुर-सली-न, वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़-लमीन। (बैहक़ी, तिरमिज़ी)

"ऐ अल्लाह, तू पाक कर दे मेरे दिल को कपट से, मेरे अमल को दिखावे से, मेरी ज़बान को झूठ से और मेरी आँख को धोखा देने से, क्योंकि तू जानता है आँखों के धोखे को और जो कुछ सीनों में छुपा होता है

उसे भी । ऐ अल्लाह, तू मेरे बातिन (अन्तर) को मेरे ज़ाहिर (बाह्य) से बेहतर कर दे, और मेरे ज़ाहिर को अच्छा कर दे । ऐ अल्लाह, मैं माँगता हूँ तुझ से बेहतर वह जो तू लोगों को देता है यानी ख़ानदान, माल और औलाद जो गुमराह और गुमराह करनेवाली न हो । सबसे बड़ा है तू इज़्ज़तवाला रब उससे जो कुछ ये (कुफ़्र व शिर्क करनेवाले) बयान करते हैं । और सलाम हो रसूलों पर और सारी तारीफ़ सारे जहाँ के रब के लिए है ।''

٤٠ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ. ـــــــــ (ترمذی)

(40) अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-कल अ़फ़-व वल आ़फ़ियह । (तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे माफ़ी और आफ़ियत का चाहनेवाला हूँ।''

٤١ رَبِّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ.

ـــــــــ (ابن ماجہ)

(41) रब्बि इन्नी अस-अलुकल आफ़ि-य-त वल मुआ- फा-त फ़िद-दुनया वल आख़िरह ।
(इब्ने माजा)

"ऐ मेरे रब, मैं तुझसे दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत और सलामती का चाहनेवाला हूँ ।"

٤٢ اَللّٰهُمَّ اَقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُوْلُ بِهٖ بَيْنَنَا وَ بَيْنَ مَعَاصِيْكَ وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهٖ جَنَّتَكَ وَمِنَ الْيَقِيْنِ مَا تُهَوِّنُ بِهٖ عَلَيْنَا مَصَآئِبَ الدُّنْيَا وَمَتِّعْنَا بِاَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَآ اَحْيَيْتَنَا وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا وَاجْعَلْ ثَارَنَا عَلٰى مَنْ ظَلَمَنَا وَانْصُرْنَا عَلٰى مَنْ عَادَانَا وَلَا تَجْعَلْ مُصِيْبَتَنَا فِيْ دِيْنِنَا وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَآ اَكْبَرَ هَمِّنَا وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا غَايَةَ رَغْبَتِنَا وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لَّا يَرْحَمُنَا. (ترمذی)

(42) अल्लाहुम-म अक़सिम लना मिन ख़श-य-ति-क मा तहूलु बिही बै-नना व बै-न मआसी-क व मिन ताअति-क मा तुबललिगुना बिही जन-न-त-क व

मिनल यक़ीनि मा तुहव्विनु बिही अ़लैना मसाइबद-दुनया व मततिए़ना बि असमाइना व अबसारिना व कुव्वतिना मा अह्ययतना वज्अ़लहुल वारि-स मिन्ना वजअ़ल सा-रना अ़ला मन ज़-ल-मना वनसुरना अ़ला मन आ़दाना व ला तजअ़ल मुसी-ब-त-ना फ़ी दीनिना व ला तजअ़लिद-दुनया अक-ब-र हम-मिना व ला मब-ल-ग़ इलमिना व ला ग़ा-य-त रग़-बतिना व ला तुसल-लित अ़लैना मल-ला यर-हमुन । (तिरमिज़ी)

" ऐ अल्लाह, तू हमें अपना इतना ख़ौफ़ अता कर जो हमारे और तेरी नाफ़रमानियों के बीच आड़ हो जाए और अपनी इतनी बन्दगी की तौफ़ीक़ अता कर जिसके ज़रिए से तू हमें अपनी जन्नत में पहुँचा दे और इतना यक़ीन अता कर जिससे तू हमारे लिए दुनिया की मुसीबतों को हेच (तुच्छ) कर दे । और जब तक तू हमें ज़िन्दा रख हमारे कानों, हमारी आँखों और हमारी ताक़त को हमारे लिए कारआमद (उपयोगी) रख । और हमारे

बाद हर एक के ख़ैर को बाक़ी रख और हमारे ज़ालिमों से हमारा इंतिक़ाम ले और हमारे दुशमनों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर । और हमारे लिए जो मुसीबत क़िस्मत में है, उसको हमारे दीन पर असरअंदाज न होने दे और दुनिया को हमारी सबसे बड़ी फ़िक्र (चिन्ता) न बना । उसे हमारे इल्म की पहुँच की आख़िरी हद और हमारी आरज़ू का आख़िरी नुक़ता ही क़रार दे । और हमारे ऊपर किसी ऐसे शख़्स को ज़िम्मेदार न बना जो हमारे साथ रहम का मामला न करे ।''

٢٣ اَللّٰهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ وَقُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ اَحْيِنِىْ مَا
عَلِمْتَ الْحَيٰوةَ خَيْرًا لِّىْ وَتَوَفَّنِىْ اِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِّىْ ،
اَللّٰهُمَّ وَاَسْئَلُكَ خَشْيَتَكَ فِى الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَاَسْئَلُكَ كَلِمَةَ
الْحَقِّ فِى الرِّضَا وَالْغَضَبِ وَاَسْئَلُكَ الْقَصْدَ فِى الْفَقْرِ وَالْغِنٰى وَ
اَسْئَلُكَ نَعِيْمًا لَّا يَنْفَدُ وَاَسْئَلُكَ قُرَّةَ عَيْنٍ لَّا تَنْقَطِعُ وَاَسْئَلُكَ
الرِّضَآءَ بَعْدَ الْقَضَآءِ وَاَسْئَلُكَ بَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَاَسْئَلُكَ

لَذَّةَ النَّظَرِ اِلٰى وَجْهِكَ وَالشَّوْقَ اِلٰى لِقَآئِكَ فِىْ غَيْرِ ضَرَّآءَ مُضِرَّةٍ
وَّلَا فِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ، اَللّٰهُمَّ زَيِّنَّا بِزِيْنَةِ الْاِيْمَانِ وَاجْعَلْنَا هُدَاةً
مَّهْدِيِّيْنَ. ____________ (نسائی)

(43) 'अल्लाहुम-म बि इलमि-कल ग़ै-ब व कुद-रति-क अलल ख़लक़ि अह-यिनी मा अलिमतल-हया-त ख़ैरल-ली व तवफ़्फ़नी इज़ा अलिम-तल वफ़ा-त ख़ैरल-ली, अल्लाहुम-म व अस-अलु-क ख़श-य-त-क फ़िल ग़ैबि वश-शहादति व अस-अलु-क कलि-मतल हक़्क़ि फ़िर-रिज़ा वल ग़-ज़बि व अस-अलुकल क़स-द फ़िल-फ़क़्रि वलग़िना व अस-अलु-क नईमल-ला यन-फ़दु व अस-अलु-क क़ुर-र-त ऐनिल ला तन-क़तिउ व अस-अलु-कर-रिज़ा-अ बअदल क़ज़ाइ व अस-अलु-क बर-दल ऐशि बअदल मौति व अस-अलु-क लज़्-ज़-तन-न-ज़-रि इला वजहि-क वश-शौ-क़ इला लिक़ाइ-क फ़ी ग़ैरि

ज़र-रा-अ मुज़िर- रतिवँ व ला फ़ित-नतिम मुज़िल-लतिन, अल्लाहुम-म ज़य़-यन्ना बिज़ी-नतिल ईमानि वजअ़लना हुदा-त महदिय्यीन । (नसई)

''ऐ अल्लाह, अपने ग़ैब के इल्म और जो कुदरत तुझे दुनिया के लोगों पर हासिल है, उसके सबब से तू मुझे ज़िन्दा रख जब तक तेरे इल्म में मेरा ज़िन्दा रहना मेरे लिए बेहतर हो । और मुझे मौत दे जब तेरे इल्म में मेरी मौत मेरे लिए बेहतर हो । और ऐ अल्लाह! मैं छुपे और ज़ाहिर हर हालत में तुझसे तेरे ख़ौफ़ का तालिब हूँ और तुझसे इसकी तौफ़ीक़ चाहता हूँ कि ख़ुशी और गुस्सा दोनों ही हालतों में हक़ बात कहूँ और तुझसे इस बात का तालिब हूँ कि मुहताजी और मालदारी में एतिदाल (संतुलन) पर क़ायम रहूँ । और तुझसे ऐसी नेमत माँगता हूँ जो लाज़वाल (नष्ट नहीं होनेवाली) हो और आँख की ऐसी ठंडक चाहता हूँ जो कभी ख़त्म न हो और तेरा फ़ैसला आ जाने के बाद उसपर राज़ी होने की तौफ़ीक़

माँगता हूँ। और मौत के बाद तुझसे ऐश की ठंडक चाहता हूँ और तुझसे तेरे रौशन चेहरे के दीदार की लज़्ज़त का सवाल करता हूँ और तुझसे तेरी मुलाक़ात का शौक़ तलब करता हूँ जो तकलीफ़देह मुसीबत और गुमराह करनेवाली बला में गिरफ़्त हुए बग़ैर हासिल हो। ऐ अल्लाह! हमें ईमान की ज़ीनत से आरास्ता (सुसज्जित) कर और हमें हिदायत पाया हुआ रहनुमा बना।''

٤٤ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِیْ يُبَلِّغُنِیْ حُبَّكَ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِیْ وَمَالِیْ وَاَهْلِیْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِدِ۔ ——— (ترمذی)

(44) अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क हुब-ब-क व हुब-ब मैयुहिब- बु-क वलअ़-म-लल-लज़ी युबल-लिग़ुनी हुब-ब-क, अल्लाहुम-मज-अ़ल हुब-ब-क अ-ह़ब-ब इलय-य मिन नफ़्सी व माली व अहली व मिनल माइल बारिद। (तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे तेरी मुहब्बत का तालिब हूँ और उनकी मुहब्बत का जो तुझसे मुहब्बत रखते हैं । और उस अमल की ख़्वाहिश रखनेवाला हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत तक ले जाए । ऐ अल्लाह, तू अपनी मुहब्बत को मेरे लिए मेरी अपनी जान, मेरे अपने माल, मेरे अपने खानदान और ठंडे पानी से भी बढ़कर महबूब बना दे ।''

क़ुनूते नाज़िला

इस दुआ में इमाम बहुवचन का प्रयोग करे और आख़िर में नबी (सल्ल०) पर दुरूद पढ़े ।

٢٥ اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْمَنْ هَدَیْتَ وَعَافِنِیْ فِیْمَنْ عَافَیْتَ وَ
تَوَلَّنِیْ فِیْمَنْ تَوَلَّیْتَ وَبَارِكْ لِیْ فِیْمَآ اَعْطَیْتَ وَقِنِیْ شَرَّمَا قَضَیْتَ
فَاِنَّكَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْكَ اِنَّهٗ لَا یَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ وَلَا یَعِزُّ
مَنْ عَادَیْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَیْكَ.

(ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ، حاکم)

(45) अल्लाहुम-मह दिनी फ़ीमन हदै-त व आफ़िनी फ़ीमन आफ़ै-त व तवल-लनी फ़ीमन तवल-लै-त व बारिक ली फ़ीमा अअ़तै-त व क़िनी शर-र मा क़ज़ै-त फ़इन-न-क तक़ज़ी व ला युक़ज़ा अ़लै-क, इन्नहू ला-यज़िल्लु मवँ-वालै-त व ला यइज़्ज़ु मन आ़दै-त तबारक-त रब्बना व तआ़लै-त व नस्तग़-फ़िरु-क व नतूबु इलैक ।

(अबू दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, हाकिम)

''ऐ अल्लाह, मुझे उन लोगों के साथ हिदायत दे जिनको तू हिदायत से नवाज़े । मुझे उन लोगों के साथ आफ़ियत (सलामती) अता कर जिन्हें तू आफ़ियत अता करे । मुझे उन लोगों के साथ अपना दोस्त बना ले जिनको तू अपना दोस्त बनाए और जो कुछ तूने मुझे दिया है उसमें बरकत डाल दे और उस चीज़ की बुराई से मुझे बचा जिसका तू फ़ैसला कर चुका है । क्योंकि तू ही फ़ैसला करता है और तेरी मरज़ी के खिलाफ़ कोई फ़ैसला

नहीं किया जा सकता । बेशक वह शख़्स रुसवा नहीं हो सकता जिसको तू अपना दोस्त बना ले और उसे इज़्ज़त नहीं मिल सकती जिसका तू दुश्मन हो जाए । ऐ हमारे रब, तू बरकतवाला और बुलन्द व बरतर है । हम तुझसे मग़फ़िरत चाहते हैं और तेरी तरफ़ रुजू करते हैं ।''

फ़ज्र की सुन्नत के बाद

तीन बार पढ़े —

(۴۶) أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ.

(الأذكار للنووي)

(46) अस्तग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैह ।

(अल-अज़कार लिन्नव्वी)

''मैं अल्लाह से मग़फ़िरत चाहता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नहीं । वह ज़िन्दा जावेद, कायनाते हस्ती का निगरानी करनेवाला व इंतिज़ाम करनेवाला है और मैं उसी

की तरफ़ लौटता हूँ ।''

मग़रिब की नमाज़ के बाद

٤٧ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قُلُوْبَنَا عَلٰى دِيْنِكَ ۔ (الاذکار للنووی)

(47) या मुक़ल्लिबल कुलूबि सब्बित कुलूबना अ़ला दीनि-क । (अल अज़कार लिन्नव्वी)

''ऐ दिलों के फेरनेवाले, हमारे दिल को अपने दीन पर जमाए रख ।''

तहज्जुद की दुआ

वुज़ू और तकबीरे तहरीमा के बाद पढ़ें —

٤٨ اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرِيْلَ وَمِيْكَآئِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ، اِهْدِنِيْ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِكَ اِنَّكَ تَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۔ (مسلم، ابوداؤد، ترمذی)

(48) अल्लाहुम-म रब-ब जिबरी-ल व मीकाई-ल व इसराफ़ी-ल फ़ातिरस-समावाति वल अरज़ि आलिमल ग़ैबि वश-शहादति अन-त तहकुमु बै-न इबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्-तलिफ़ून । इहदिनी लिमख़्-तुलि-फ़ फ़ीहि मिनल हक़्-क़ि बि-इज़नि-क इन-न-क तहदी मन तशाउ इला सिरातिम मुस्तक़ीम । (मुसलिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह ! जिबरील, मीकाईल और इसराफ़ील के रब, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले, ऐ छुपे और ज़ाहिर के जाननेवाले, तू ही अपने बन्दों के बीच जिन बातों में वे इख़तिलाफ़ (मतभेद) करते हैं, फ़ैसला करेगा । तू उस हक़ के बारे में अपनी मरज़ी से मेरी रहनुमाई कर जिसमें इख़तिलाफ़ किया गया है । बेशक तू ही जिसको चाहता है सीधे रास्ते की ओर उसकी रहनुमाई करता है ।''

٤٩ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ
وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ
الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ
الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ وَلِقَآءُكَ حَقٌّ وَّقَوْلُكَ حَقٌّ وَّالْجَنَّةُ حَقٌّ وَّالنَّارُ
حَقٌّ وَّالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ وَّمُحَمَّدٌ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ حَقٌّ. اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ
وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْكَ اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ
وَاِلَيْكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْ لِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَآ اَخَّرْتُ وَمَآ اَسْرَرْتُ
وَمَآ اَعْلَنْتُ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ
لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. (بخاری، مسلم، نسائی، ابن ماجہ)

(49) अल्लाहुम-म ल-कल हम्दु अन-त क़य्यिमुस-समावाति वल अरज़ि व मन फ़ीहिन-न व ल-कल हम्दु अन-त मलिकुस-समावाति वल अरज़ि व मन फ़ीहिन-न व ल-कल हम्दु अन-त नूरुस-समावाति वल अरज़ि व मन फ़ीहिन-न व ल-कल हम्दु अनतल हक़्क़ु व वअ़दुकल हक़्क़ु व लिक़ाउ-क हक़्क़ुवँ व

क़ौलु-क हक़्क़ुवँ वल जन्नतु हक़्क़ुवँ वन-नारु हक़्क़ुवँ वन-नबीयू-न हक़्क़ुवँ व मुहम्मदुन हक़्क़ुवँ वस-साअ़तु हक़्क़ुन । अल्लाहुम-म ल-क अस्लमतु व बि-क आमनतु व अ़लै-क त-वक-कलतु व इलै-क अ-नबतु व बि-क ख़ासमतु व इलै-क हाकमतु फ़ग़फ़िरली मा क़द-दमतु व मा अख़-ख़रतु व मा अस-ररतु व मा अअ़-लनतु व मा अन-त अअ़-लमु बिही मिन्नी अन्तल मुक़द्दिमु व अनतल मुअख़-ख़िरु ला इला-ह इल्ला अन-त वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह । (बुख़ारी, मुसलिम, नसई, इब्ने माजा)

"ऐ अल्लाह, तेरे ही लिए सब तारीफ़ है, तू ही आसमानों और ज़मीन का और उनका जो इनमें हैं, क़ायम रखनेवाला है । और तेरे ही लिए सब तारीफ़ है । तू ही आसमानों और ज़मीन का और उनका जो उनमें हैं बादशाह है और तेरे ही लिए सब तारीफ़ है, तू ही आसमानों और ज़मीन का और उनका जो इनमें है नूर है ।

और तेरे ही लिए सब तारीफ़ है, तू ही हक़ है, और तेरा वादा हक़ है, और तुझसे मुलाक़ात हक़ है, और तेरा क़ौल (कथन) हक़ है, और जन्नत हक़ है, दोज़ख़ हक़ है, सारे नबी बरहक़ हैं, और मुहम्मद *(सल्ल०)* बरहक़ हैं, और क़ियामत हक़ है । ऐ अल्लाह, मैंने तेरे ही आगे सिर झुकाया, मैं तुझी पर ईमान लाया । मैंने तुझी पर भरोसा किया और मैं तेरी ही तरफ़ पलटा और तेरी ही मदद से (हक़ के दुश्मनों से) मुक़ाबला किया और तेरी ही तरफ़ फ़ैसले के लिए आया । तो तू मेरे अगले-पिछले, छुपे और ज़ाहिर और उन गुनाहों को जिनको तू मुझसे ज़्यादा जानता है, माफ़ कर दे । तू आगे और पीछे करनेवाला है । तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, और एक हालत का दूसरी हालत में बदलना और उसकी ताक़त का हासिल होना ख़ुदा की मदद के बिना मुमकिन नहीं ।''

हज की दुआएँ

हज के दौरान उठते-बैठते, चलते-फिरते पढ़ें

(٥٠) لَبَّيْكَ، اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، لَبَّيْكَ، اِنَّ
الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ.

(نسائی، بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ)

(50) लब्बै-क, अल्लाहुम-म लब्बै-क, लब्बै-क ला शरी-क ल-क, लब्बै-क, इन्नल हम-द वन-ने अ़-म-त ल-क वल मुल-क ला शरी-क ल-क ।

(नसई, बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

''हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ (तेरे दरबार में) । तेरा कोई शरीक़ नहीं । मैं हाज़िर हूँ, यक़ीनन हम्द (सना व शुक्र) तेरे ही लिए है । सब नेमतें तेरी ही हैं और मुल्क और इक़तिदार तेरे ही लिए है । (किसी चीज़ में भी) तेरा कोई शरीक नहीं ।''

काबा को देखकर

٥١ اَللّٰهُمَّ زِدْ هٰذَا الْبَيْتَ تَشْرِيْفًا وَّتَعْظِيْمًا وَّتَكْرِيْمًا وَّمَهَابَةً
وَّزِدْ مَنْ شَرَّفَهٗ وَكَرَّمَهٗ مِمَّنْ حَجَّهٗ وَاعْتَمَرَهٗ تَشْرِيْفًا وَّتَكْرِيْمًا
وَّبِرًّا۔ ———— (الاذكار للنووی)

(51) अल्लाहुम-म ज़िद हाज़ल बै-त तशरीफ़वँ व तअ़ज़ीमवँ व तकरीमवँ व महा-ब-तवँ व ज़िद मन शर-र-फ़हू व कर-र-महू मिम-मन हज-जहू वअ़-त-म-रहू तशरीफ़वँ व तकरीमवँ व बिर्रा ।

(अल अज़कार लिन्नव्वी)

''ऐ अल्लाह, तू इस घर की इज़्ज़त व अज़मत व बुज़ुर्गी और शान में इज़ाफ़ा कर और हज और उमरा करनेवालों में जो इसकी इज़्ज़त और सम्मान करें, उन्हें भी इज़्ज़त व सम्मान और नेकी में तरक़्क़ी दे।''

ज़मज़म का पानी पीने के आदाब

क़िबला की तरफ़ मुँह करके और खड़े होकर तीन साँस में ज़मज़म का पानी पीना चाहिए और हर बार शुरू में बिसमिल्लाह और आख़िर में अलहम्दुलिल्लाह कहिए। इतना पिएँ कि पसलियाँ ख़ूब तन जाएँ। (दारे क़ुतनी)

ज़मज़म का पानी पीने के मौक़े पर पढ़ें —

٥٢ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْۤ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَآءٍ. ——— (الحاكم، دارقطنى)

(52) अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क इलमन नाफ़िअवँ व रिज़कवँ वासिअवँ व शिफ़ाअम मिन कुल्लि दाइन। (अल-हाकिम, दारे क़ुतनी)

"ऐ अल्लाह, मैं तुझसे फ़ायदा पहुँचानेवाला इल्म और कुशादा रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा की दरख़्वास्त करता हूँ।"

सई के मौक़े पर

सफ़ा व मरवा पर चढ़ने के बाद पढ़ें —

٥٣ اَللّٰهُ اَكْبَرُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ
وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ اَنْجَزَ
وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ. ———— (مسلم)

(53) अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू अन-ज-ज़ वअ़्दहू व न- स-र अ़ब-दहू व ह-ज़-मल-अहज़ा-ब वह-दहू। (मुसलिम)

''अल्लाह बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए हुकूमत और बादशाही है, और उसी के लिए सारी तारीफ़ें हैं। और उसे हर चीज़ पर कुदरत हासिल है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है। उसने

अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मदद की। और बड़ी दलवाली फ़ौजों को अकेले हराया।''

अरफ़ात में ठहरने पर

٥٤ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ. (ترمذی)

(54) ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर। **(तिरमिज़ी)**

''अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। सल्तनत और बादशाही उसी के लिए है, और सब तारीफ़ उसी के लिए है। और उसे हर चीज़ पर कुदरत हासिल है।''

हज या उमरा से वापसी पर रास्ते में

۵۵ اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا
شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ آئِبُوْنَ،
تَآئِبُوْنَ، عَابِدُوْنَ، سَاجِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ، صَدَقَ اللّٰهُ
وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ ۔

(بخاری، مسلم، ترمذی، ابوداؤد، نسائی)

(55) अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर । आइबू-न, ताइबू- न, आ़बिदू-न, साजिदू-न लिरब-बिना हा़मिदून । स-द-कल्लाहु वअ़-दहू व न-स-र अ़ब-दहू व ह-ज़-मल अहज़ा-ब वह-दहू ।

(बुखारी, मुसलिम, तिरमिज़ी, अबू दाऊद, नसई)

''अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा

है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए सल्तनत और बादशाही है, और उसी के लिए सब तारीफ़ें हैं, और उसे हर चीज़ पर पूरी कुदरत हासिल हैं। हम पलटते हैं (ख़ुदा की ओर), तौबा करते हैं, बन्दगी करते है, सजदा करते हैं, हम अपने रब की हम्द करते हैं। अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे (मुहम्मद सल्ल०) की मदद की और बड़े दलवाली फ़ौजों को अकेले हराया।''

कुरबानी की दुआ

(٥٩) اِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا
وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ . اِنَّ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ
لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ . لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ
الْمُسْلِمِيْنَ . اَللّٰهُمَّ لَكَ وَمِنْكَ . بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ.

(56) इन्नी वज-जहतु वजहि-य लिल-लज़ी फ़-त-रस-समावाति वल अर-ज़ हनीफ़वँ व मा अना मिनल मुशरिकीन । इन-न सलाती व नुसुकी व महया-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन । ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिरतु व अना अव-वलुल मुसलिमीन । अल्लाहुम-म ल-क व मिन-क । बिसमिल्लाहि अल्लाहु अकबर ।

"मैंने यकसू होकर अपना रुख़ उसकी तरफ़ किया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, मैं शिर्क नहीं करता । बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब सारे जहाँ के रब अल्लाह के लिए है । उसका कोई शरीक नहीं है । मुझे उसी का हुक्म हुआ है और सबसे पहले हुक्म माननेवाला मैं हूँ । ऐ अल्लाह, ये तेरे लिए है और तेरा ही दिया हुआ है । अल्लाह के नाम से, अल्लाह बहुत बड़ा है ।"

ज़िब्ह (ज़बह) के बाद

(٥٧) اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ وَحَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ.

(57) अल्लाहुम-म तक़ब्बल मिन्नी कमा तक़ब्बल-त मिन ख़लीलि- क इबराही-म व हबीबि-क मुहम्मदिन अ़लैहिमस-सलातु वस्सलाम ।

"ऐ अल्लाह, इसे मेरी तरफ़ से क़बूल कर, जिस तरह तूने अपने ख़लील इबराहीम *(अलै०)* और अपने हबीब हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* की तरफ़ से क़बूल फ़रमाया है । इन दोनों पर रहमत और सलामती हो ।"

नोट - अगर कुरबानी किसी दूसरे की तरफ़ से की जाए तो 'मिन्नी' की जगह 'मिन' कहकर उस शख़्स का नाम मिलाकर पढ़ें ।

इफ़तार की दुआ

इफ़तार से पहले पढ़ें

٥٨ اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ ـــــــ (ابوداؤد)

(58) अल्लाहुम-म ल-क सुमतु व अ़ला रिज़्क़ि-क अफ़-तरतु। (अबू दाऊद)

"ऐ अल्लाह, तेरे लिए मैंने रोज़ा रखा और तेरे दिए रिज़्क पर मैंने इफ़तार क़िया।"

इफ़तार के बाद पढ़ें

٥٩ ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْاَجْرُ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ .

ـــــــ (ابوداؤد)

(59) ज़-ह-बज़-ज़-म-उ वबतल-लतिल उ़रूकु व स-ब-तल अजरु इनशा अल्लाह । (अबू दाऊद)

"प्यास जाती रही और रगें तर हो गई और अगर अल्लाह ने चाहा तो अज्र भी साबित हो गया।"

दुरूद शरीफ़

(٦٠) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ——— (بخاری، مسلم)

(60) अल्लाहुम-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिवँ व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अ़ला इबराही-म व अ़ला आलि इबराही-म इन-न-क हमीदुम मजीद। अल्लाहुम-म बारिक अ़ला मुहम्मदिवँ वअ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अ़ला इबराही-म व अ़ला आलि इबराही-म इन-न-क हमीदुम मजीद।

(बुख़ारी, मुसलिम)

''ऐ अल्लाह, तू रहमत भेज हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* और मुहम्मद *(सल्ल०)* की आल पर, जैसा कि तूने रहमत भेजी इबराहीम *(अलै०)* और इबराहीम *(अलै०)* की

आल पर । बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल और बुज़ुर्ग है । ऐ अल्लाह, तू बरकत नाज़िल फ़रमा हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* और हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* की आल पर, जैसा कि तूने बरकत नाज़िल फ़रमाई हज़रत इबराहीम *(अलै०)* और इबराहीम *(अलै०)* की आल पर । बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल और बुज़ुर्ग है ।''

(٦١) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰۤى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰۤى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ـــــــــ (بخاری، مسلم)

(61) अल्लाहुम-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिवँ व अज़्वाजिही व ज़ुर्रीयतिही कमा सल्लै-त अ़ला इबराही-म व बारिक अ़ला मुहम्मदिवँ व अज़्वाजिही व ज़ुर्रीयतिही कमा बारक-त 'अला इबराही-म इन-न-क हमीदुम मजीद । (बुख़ारी, मुसलिम)

''ऐ अल्लाह तू रहमत नाज़िल कर हज़रत मुहम्मद

(सल्ल०) पर, आप (सल्ल०) की बीवियों और आप (सल्ल०) की औलाद पर, जिस तरह तूने रहमत नाज़िल की हज़रत इबराहीम (अलै०) पर। और बरकत नाज़िल फ़रमा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर, और आप (सल्ल०) की औलाद पर, जिस तरह तूने बरकत नाज़िल की हज़रत इबराहीम (अलै०) पर। बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल और बुज़ुर्ग है।''

हाजत और ज़रूरत की नमाज़

दो रकअत नमाज़ पढ़ें, ख़ुदा की हम्द करें और नबी (सल्ल०) पर दुरूद भेजें, फिर यह दुआ पढ़ें —

٦٢ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ. سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ
وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْعِصْمَةَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ
بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ. لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا
اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

(ترمذی، ابن ماجہ، حاکم)

(62) ला इला-ह इल्लल्लाहुल हलीमुल करीम । सुबहानल्लाहि रब्बिल अरशिल अज़ीम । अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन । अस-अलु-क मूजिबाति रह-मति-क व अज़ाइ-म मग़फ़ि-रति-क वल इस-म-त मिन कुल्लि ज़मबिवँ वल ग़नी-म-त मिन कुल्लि बिर-रिवँ वस-सला-म-त मिन कुल्लि इसमिन, ला त-दअ् ली ज़मबन इल्ला ग़-फ़र-तहू वला हम-मन इल्ला फ़र-रज-तहू वला हा-ज-तन हि-य रिज़न इल्ला क़ज़ै-तहा या अर-ह-मर राहिमीन ।

(तिरमिज़ी, इब्ने माजा, हाकिम)

"हलीम और करीम अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं । अज़मतवाला है अल्लाह अर्शे अज़ीम (सर्वोच्च सिंहासन) का रब । सब तारीफ़ अल्लाह के लिए जो सारे जहाँ का रब है । मैं तुझसे तेरी रहमत का हक़दार बनाने

वाली और तेरी मग़फ़िरत को यक़ीनी बनानेवाली बातों की तौफ़ीक़ माँगता हूँ । और मैं तुझसे हर गुनाह से बचने, हर भलाई से फ़ायदा उठाने और हर बुराई से बचे रहने की दरख़्वास्त करता हूँ । मेरा कोई गुनाह ऐसा बाक़ी न रख जिसे तू बख़्श न दे, न कोई परेशानी ऐसी छोड़ जिसे तू दूर न कर दे, न कोई ऐसी ज़रूरत — जो तेरी रज़ा के मुताबिक़ हो — रह जाए जिसको तू पूरा न कर दे, ऐ मेहरबानों के मेहरबान ।''

नमाज़े इसतिख़ारा

दो रकअत नमाज़ पढ़कर यह दुआ पढ़ें —

٦٣ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ
وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ. فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ
وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ. اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا
الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ فَاقْدُرْهُ لِیْ وَ

يَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي
فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ
وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِي بِهٖ.

(بخاری، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، ابن ماجہ، احمد)

(63) अल्लाहुम-म इन्नी अस-तख़ीरु-क बि-इलमि-क व अस-तक़- दिरु-क बिक़ुद-रति-क व अस-अलु-क मिन फ़ज़लिकल अ़ज़ीम । फ़-इन-न-क तक़दिरु व ला अक़दिरु व तअ़लमु व ला अअ़लमु व अन-त अ़ल्लामुल गुयूब । अल्लाहुम-म इन कुन-त तअ़लमु अन-न हाज़ल अम-र ख़ैरुल-ली फ़ी दीनी व मआ़शी व आ़क़ि-बति अमरी फ़क़दिरहु ली व यस-सिरहु ली सुम-म बारिक ली फ़ीहि व इनकुन-त तअ़लमु अन-न हाज़ल अम-र शर्रुल्ली फ़ी दीनी व मआ़शी व आ़क़ि-बति अमरी फ़सरिफ़हु अ़न्नी वसरिफ़नी अ़नहु वक़दिर लियल ख़ै-र हैसु का-न सुम-म अरज़िनी बिह ।

(बुख़ारी, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, नसई, इब्ने माजा, अहमद)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे तेरे इल्म के सहारे भलाई चाहता हूँ, और तुझसे तेरी कुदरत के ज़रिए से कुदरत तलब करता हूँ । और तुझसे तेरी बड़ी मेहरबानी क़ा तालिब हूँ, क्योंकि तू ही कुदरत रखता है, मुझे कुदरत हासिल नहीं और तू ही जानता है, मैं नहीं जानता और तू ही ग़ैब की बातों को बख़ूबी जानता है । ऐ अल्लाह, अगर तू जानता है कि यह काम मेरे लिए, मेरे दीन, मेरी दुनिया और मेरे अनजाम के लिहाज़ से बेहतर है तो तू इसे मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा और इसे मेरे लिए आसान कर दे । फिर इसमें मेरे लिए बरकत रख दे, और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे लिए, मेरे दीन, मेरी दुनिया और मेरे अनजाम के लिहाज़ से बुरा है तो इसको मुझसे फेर दे और मुझे इससे दूर रख । और मेरे लिए भलाई मुक़द्दर कर जहाँ भी वह हो, फिर मुझको उसपर राज़ी कर दे ।''

जिहाद के मौक़े पर

٦٤ اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ وَمُجْرِيَ السَّحَابِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ وَ
هَازِمَ الْاَحْزَابِ. اَللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ. (بخاری)

(64) अल्लाहुम-म मुनज़िलल किताबि व मुजरियस-सहाबि व सरी-अ़ल हिसाबि व हाज़िमल अहज़ाब । अल्लाहुम-म अहज़िमहुम व ज़ल-ज़िल हुम वनसुरना अ़लैहिम । (बुख़ारी)

"ऐ अल्लाह, ऐ किताब के नाज़िल करनेवाले, ऐ बादलों को चलानेवाले और जल्द हिसाब लेनेवाले और (हक़ के मुक़ाबले में खड़ी तैयार) फ़ौजों को हरानेवाले, ऐ अल्लाह इनको हरा और इनको हिलाकर रख दे और इनके मुक़ाबले में हमारी मदद कर ।"

٦٥ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عَضُدِيْ وَنَصِيْرِيْ بِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ
اُقَاتِلُ ——— (ترمذی، ابوداؤد، احمد)

(65) अल्लाहुम-म अन-त अज़ुदी व नसीरी बि-क अहूलु व बि-क असूलु व बि-क उक़ातिल।

(तिरमिज़ी, अबू दाऊद, अहमद)

"ऐ अल्लाह, तू ही मेरा सहारा है और मेरा मददगार है। तेरे ही भरोसे पर मैं चलता-फिरता हूँ, और तेरी ही मदद से हमला करता हूँ और तेरे ही भरोसे पर लड़ता हूँ।"

٦٦ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ . (بخاری، الحاکم، مسلم، ابوداؤد، ترمذی)

(66) हसबुनल्लाहु व निअ़मल वकील ।

(बुख़ारी, हाकिम, मुसलिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

"हमें अल्लाह काफ़ी है और वह क्या ही अच्छा कारसाज़ (काम करनेवाला) है।"

हक़ की दावत देनेवाले की दुआएँ

٦٧ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً
مِّنْ لِّسَانِيْ ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿٢٨﴾ (طٰہٰ: ٢٥-٢٨)

(67) रबबिश-रहली सदरी व यससिरली अमरी । वहलुल उक़्-द- तम मिललिसानी यफ़-क़हू क़ौली ।

(कुरआन, 20:25-28)

"मेरे रब, मेरा सीना मेरे लिए खोल दे और मेरी मुहिम को मेरे लिए आसान कर दे, और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे ताकि वे मेरी बात समझ सकें ।"

٦٨ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ (نوح : ٢٨)

(68) रबबिग़फ़िरली वलिवालि-दय्-य वलिमन द-ख़-ल बयति-य मोमिनवँ व लिलमोमिनी-न वल मोमिनात । **(कुरआन, 71: 28)**

"मेरे रब, मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदैन (माँ-बाप) को भी और हर उस शख़्स को जो मेरे घर में मोमिन की हैसियत से दाखिल हुआ, और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ।"

٦٩ رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ ﴿۸۹﴾ ـــــ(الانبیاء: ۸۹)

(69) रबबि ला-त-ज़रनी फ़रदवँ व अन-त ख़ैरुल वारिसीन। (कुरआन, 21:89)

''मेरे रब, मुझे अकेला न छोड़, यूँ बेहतरीन वारिस तो तू ही है।''

٧٠ رَبِّ ابْنِ لِیْ عِنْدَكَ بَیْتًا فِی الْجَنَّةِ وَنَجِّنِیْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ
عَمَلِهٖ وَنَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۱﴾ ـــــ(التحریم: ۱۱)

(70) रबबिबनि ली इन-द-क बै-तन फ़िल जन्नति व नजजिनी मिन फ़िरऔ-न व अ-म-लिही व नजजिनी मिनल क़ौमिज़-ज़ालिमीन।

(कुरआन, 66:11)

''मेरे रब, तू मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से निजात दे और मुझे निजात दे ज़ालिम क़ौम से।

٧١ اَلَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ یَهْدِیْنِ ﴿۷۸﴾ وَالَّذِیْ هُوَ یُطْعِمُنِیْ وَیَسْقِیْنِ ﴿۷۹﴾
وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ ﴿۸۰﴾ وَالَّذِیْ یُمِیْتُنِیْ ثُمَّ یُحْیِیْنِ ﴿۸۱﴾ وَالَّذِیْ

اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـــَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿۸۲﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّ
اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۸۴﴾
وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿۸۵﴾ ـــــــ (الشعرآء: ۸۵-۷۸)

(71) अल-लज़ी ख़-ल-क़-नी फ़-हु-व यहदीनि, वल-लज़ी हु-व युतइमुनी व यसक़ीनि, व इज़ा मरिज़तु फ़-हु-व यशफ़ीन । वल-लज़ी युमीतुनी सुम-म युह-यीनि, वल-लज़ि अत-म-उ अयँ- यग़फ़ि-रली ख़ती-अती यौमद्-दीन । रब्बि हबली हुक्मवँ व अल्हिक़नी बिस्सालिहीन, वजअ़ल्ली लिसा-न सिदक़िन फ़िल आख़िरीन, वज अ़ल्नी मिवँ व-र-सति जन्नतिन नईम । (क़ुरआन, 26:78-85)

''जिसने मुझे पैदा किया, और फिर वही मेरी रहनुमाई करता है, और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है, और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे सेहत देता है । और वही है जो मुझे मारेगा, फिर मुझे

ज़िन्दा करेगा। और वही है जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि बदले के दिन को वह मेरी ख़ता बख़्श देगा। मेरे रब, मुझे हिकमत अता कर और मुझे परहेज़गारों के साथ मिला और बाद के आनेवालों में मुझे नेकनामी अता कर, और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में शामिल कर।''

۞ اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝٤٦ (الزمر:٤٦)

(72) अल्लाहुम-म फ़ाति-रस-समावाति वल-अरज़ि आलिमल ग़ैबि वश-शहा-दति अन-त तहकुमु बै-न इबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़-तलिफ़ून।

(क़ुरआन, 39:46)

''ऐ अल्लाह, आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले, ग़ायब और हाज़िर के जाननेवाले, तू ही अपने बन्दों के बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर दे जिसमें वे इख़तिलाफ़ कर रहे हैं।''

۞ اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ فَلَا تَكِلْنِىْٓ اِلٰى نَفْسِىْ طَرْفَةً وَّاَصْلِحْ لِىْ شَاْنِىْ كُلَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ ——— (ابوداؤد)

(73) अल्लाहुम-म रह-म-त-क अरजू फ़ला तकिलनी इला नफ़सी तर-फ़-तवँ व असलिह ली शानी कुल-लहू ला इला-ह इल्ला अन-त ।

(अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह, मैं तेरी रहमत का उम्मीदवार हूँ । तो एक लम्हे के लिए भी मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर, और मेरे हर एक काम को दुरुस्त कर दे । तेरे सिवा कोई भी माबूद नहीं ।''

۞ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِىْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ——— (بخاری، مسلم)

(74) अल्लाहुम-मग़फ़िर लि-क़ौमी फ़-इन-नहुम ला यअ़-लमून । (बुख़ारी, मुसलिम)

''ऐ अल्लाह, मेरी क़ौम के लोगों को माफ़ कर दे क्योंकि वे जानते नहीं ।''

(۷۵) اَللّٰهُمَّ اهْدِ دَوْسًا وَّاْتِ بِهِمْ ـــــــــــــ (بخاری)

(75) अल्लाहुम-महदि दौ-सवँ व आति बिहिम ।
(बुख़ारी)

''ऐ अल्लाह, दौस को हिदायत दे और उन्हें इस्लाम में ले आ ।''[1]

(۷۶) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْقَذَهٗ بِیْ مِنَ النَّارِ ـــــــــــــ (ابوداؤد)

(76) अलहम्दु लिल्लाहिल-लज़ी अन-क़-ज़-हू बी मिनन-नार।
(अबू दाऊद)

''सना व शुक्र है अल्लाह के लिए जिसने मेरे ज़रिये से उसे आग से नजात दी ।''[2]

---

1. नबी *(सल्ल०)* से तुफ़ैल बिन अम्र दौसी (रज़ि०) और उनके साथियों ने दरख़्वास्त की कि क़बीला दौस के लोगों ने नाफ़रमानी का तरीक़ा इख़तियार किया और आप *(सल्ल०)* की पैरवी से इनकार कर दिया, आप *(सल्ल०)* उनके लिए बद्दुआ करें । इसके जवाब में आप *(सल्ल०)* ने बद-दुआ के बजाए क़बीला दौस की हिदायत की दुआ फ़रमाई ।
2. आप (सल्ल०) एक बीमार यहूदी लड़के को देखने गए और उसे इस्लाम कबूल करने की दावत दी । उसके ईमान लाने पर आप *(सल्ल०)* की ज़बाने मुबारक से यह कलिमात अदा हुए ।

ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर

सलाम

۷۷ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ ۔

(77) अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुहू ।

''तुमपर सलामती हो और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकत ।''

मुसाफ़हा (हाथ मिलाने) के वक़्त

۷۸ يَغْفِرُ اللّٰهُ لِي وَلَكُمْ ________ (مجمع الزوائد)

(78) यग़्फ़िरुल्लाहु ली व लकुम

(मजमउज़-ज़वाइद)

''अल्लाह मेरी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए ।''

٧٩ نَحْمَدُ اللّٰهَ وَنَسْتَغْفِرُ لَكُمْ ـــــــــــ (ابوداؤد)

(79) नह-मदुल्ला-ह व नस-तग़फ़िरु लकुम ।

(अबू दाऊद)

''हम अल्लाह की हम्द करते हैं और तुम्हारे लिए बख़शिश चाहते हैं ।''

छींक आने पर

(80) छींकनेवाला कहे :

٨٠ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ.

अलहम्दु लिल्लाह ।

''हम्द व शुक्र अल्लाह के लिए है ।''

सुननेवाला कहे :

يَرْحَمُكَ اللّٰهُ.

यर-हमु-कल्लाह ।

''अल्लाह तुमपर रहम फ़रमाए ।''

फिर छींकनेवाला कहे :

يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

यहदीकुमुल्लाहु व युसलिहु बा लकुम ।

(बुख़ारी, अहमद)

''अल्लाह तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारे हाल को दुरुस्त फ़रमाए।''

मजलिस की दुआ

٨١ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ ______ (ترمذی، احمد)

(81) सुब्हा-न-क अल्लाहुम-म व बि-हमदि-क अश-ह-दु अल-ला इला-ह इल्ला अन-त असतग़-फ़िरु-क व अतूबु इलै-क । (तिरमिज़ी, अहमद)

''क्या ही अज़मतवाला है तू, ऐ अल्लाह, और तेरी

तारीफ़ करता हूँ । गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं । तुझसे बख़्शिश तलब करता हूँ और तेरी ही तरफ़ लौटता हूँ ।''

हदिया (तोहफ़ा) देनेवाले को दुआ

٨٢ بَارَكَ اللّٰهُ فِيْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ ۔ ______ (بخاری)

(82) बा-र-कल्लाहु फ़ी अहलि-क व मालि-क ।
(बुख़ारी)

''ख़ुदा तुम्हारे अहल व अयाल (बाल-बच्चों) और माल में बरकत दे ।''

निकाह के लिए इसतिख़ारा

अच्छी तरह वुज़ू करके नमाज़ पढ़ें, फिर अपने रब की हम्द करें और उसकी बुज़ुर्गी बयान करें । फिर यह दुआ करें —

۸۳ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ. فَاِنْ رَّاَيْتَ اَنَّ فِيْ فُلَانَةٍ (فُلَانَةٍ ....) خَيْرًا لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَاٰخِرَتِيْ فَاقْدُرْهَا لِيْ. وَاِنْ كَانَ غَيْرُهَا خَيْرًا لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَاٰخِرَتِيْ فَاقْدُرْهَا لِيْ.

(احمد، البیہقی فی شعب الایمان، الطبرانی فی الکبیر)

(83) अल्लाहुम-म इन-न-क तक़दिरु व ला अक़दिरु व तअ़-लमु व ला अअ़लमु व अन-त अ़ल्लामुल ग़ुयूब । फ़इर र-ऐ-त अन-न फ़ी फ़ुला-नतिन ('फ़ुला-नतिन' की जगह औरत का नाम लें) ख़ैरल्ली फ़ी दीनी व दुनया-य व आख़ि-रती फ़क़्दुरहा ली, व इन का-न ग़ैरुहा ख़ैरल्ली फ़ी दीनी व दुनया-य व आख़ि-रती फ़क़्दुरहा ली ।

(अहमद, अलबैहक़ी फ़ी शोबिल ईमान, तबरानी फ़िल कबीर)

"ऐ अल्लाह, बेशक तू ही क़ादिर है, मुझे क़ुदरत हासिल नहीं; और तू ही जानता है, मैं नहीं जानता; और तुझे ग़ैब की सारी बातों का इल्म है । अगर तू जानता है

कि फ़लाँ औरत में मेरे लिए, मेरे दीन के लिए, मेरी दुनिया और मेरी आख़िरत के लिए भलाई है तो उसे मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा । और अगर कोई दूसरी औरत मेरे लिए, मेरे दीन, मेरी दुनिया और मेरी आख़िरत के लिहाज़ से बेहतर हो तो फिर उसको मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा ।''

नोट: यह दुआ पढ़कर सो जाए, इंशाअल्लाह इस सिलसिले में ख़ुदा उसकी रहनुमाई करेगा ।

निकाह का ख़ुतबा

٨٢ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ
مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ
لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهٗ بِالْحَقِّ
بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ، مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ رَشَدَ وَمَنْ يَّعْصِهِمَا
فَاِنَّهٗ لَا يَضُرُّ اِلَّا نَفْسَهٗ وَلَا يَضُرُّ اللّٰهَ شَيْئًا، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ

الرَّجِيْمِ ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ، يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا
رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ
مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِیْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ
وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ○ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا
اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ○ یٰۤاَیُّهَا
الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِیْدًا ۙ○ یُّصْلِحْ لَكُمْ
اَعْمَالَكُمْ وَیَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ
فَوْزًا عَظِیْمًا ○ ــــــــــــــــ (ترمذی، ابو داؤد، ابن ماجہ، نسائی، الحاکم)

(84) अलहम्दु लिल्लाहि नह-मदुहू व नस-तईनुहू व नसतग़-फ़िरुहू व नऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अनफ़ुसिना व मिन सय्यिआति अअ़मा- लिना मय्यहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल-ल लहू व मय्युज़लिल्हु फ़ला हादि- य लहू व अश-हदु अल ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू व अश-हदु अन-न मुहम्मदन अ़बदुहू व रसूलुहू अर-स-लहू बिल

हक़्क़ि बशीरवँ व नज़ीरा । मयँयुतिइल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द र-श-द व मयँयअ्सिहिमा फ़इन्नहू ला यज़ुर्रु इल्ला नफ़-सहू व ला यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर्रजीम। बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। या अय्युहन नासुत-तक़ू रब-बकुमुल लज़ी ख़-ल-क़-कुम मिन नफ़सिवँ वाहि-दतिवँ व ख़-ल-क़ मिनहा ज़ौजहा व बस-स मिनहुमा रिजालन कसीरवँ व निसाअवँ, वत-तक़ुल्लाहल-लज़ी तसा-अलू-न बिही वल अरहाम। इन्नल्ला-ह का-न अलैकुम रक़ीबा । या अय्युहल लज़ी-न आमनुत-तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन-न इल्ला व अनतुम मुसलिमून । या अय्युहल-लज़ी-न आमनुत-तक़ुल्ला-ह व क़ूलू क़ौलन सदीदा । युसलिह लकुम अअ्मालकुम व यग़फ़िर-लकुम ज़ुनू-बकुम व मय्युति'इल्ला-ह व रसू-लहू फ़क़द फ़ा-ज़ फ़ौज़न अज़ीमा।

(तिरमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, नसई, हाकिम)

''सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, हम उससे मदद चाहते हैं और उसी से मग़फ़िरत चाहते हैं और हम अपने नफ़्स की बुराइयों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं । जिसको अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह करनेवाला नहीं और जिसको वह गुमराही में छोड़ दे उसे कोई हिदायत देनेवाला नहीं । मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं इसकी भी गवाही देता हूँ कि मुहम्मद *(सल्ल०)* अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं । आप *(सल्ल०)* को (ख़ुदा ने) हक़ के साथ ख़ुशख़बरी देनेवाला और ख़बरदार करनेवाला बनाकर भेजा है। जिसने अल्लाह और उसके रसूल *(सल्ल०)* की इताअत इख़तियार की उसे सच्चाई की हिदायत हासिल हुई और जो कोई उनकी नाफ़रमानी इख़तियार करेगा वह ख़ुद अपने आप ही को नुक़सान पहुँचाएगा, वह ख़ुदा का कुछ भी न बिगाड़ सकेगा । मैं शैतान मरदूद से बचने के लिए अल्लाह की पनाह चाहता हूँ । अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहमवाला है । ऐ लोगो! अपने रब

का डर रखो जिसने तुम्हें अकेली जान बनाया और उसी ज़ैसा उसके लिए जोड़ा पैदा किया, और इन दोनों से बहुत-से मर्द और औरतें फैला दीं । अल्लाह का डर रखो, जिसका वास्ता देकर तुम एक दूसरे के सामने अपनी माँग रखते हो और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें खयाल रखना है । यक़ीनन अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है । ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह का डर रखो जैसा कि उससे डरने का हक़ है और मरना तो इस हाल में मरना कि तुम मुसलमान (फ़रमाँबरदार) हो । ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो और बात दुरुस्त कहो, वह तुम्हारे आमाल को दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाहों को बख्श देगा और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की इताअत इखतियार करे उसने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली ।''

दुल्हा-दुल्हन के लिए दुआ

٨٥ بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِيْ خَيْرٍ

(ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ، نسائی، احمد)

(85) बा-र-कल्लाहु ल-क व बा-र-क अ़लै-क व ज-म-अ़ बै-नकुमा फ़ी ख़ैर ।

(अबू दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, नसई, अहमद)

''अल्लाह तुम्हारे लिए बरकत अता फ़रमाए और तुमपर बरकत नाज़िल करे और तुम दोनों के बीच भलाई के मामले में तालमेल पैदा करे ।''

बीवी के पास जाने पर

٨٦ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

(بخاری)

(86) बिसमिल्लाहि अल्लाहुम-म जन्निब-नश

शैता-न व जन्निबिश शैता-न मा रज़क़-तना ।

(बुख़ारी)

''अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह, हमको शैतान से दूर रख और शैतान को उससे दूर रख जो तू हमें नसीब फ़रमाए ।''

अक़ीक़े की दुआ

۸۶ اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ ...... دَمُهَا بِدَمِهٖ وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ
وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهٖ وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ ۚ اِنِّىْ وَجَّهْتُ
وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝
اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ.

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

(87) अल्लाहुम-म हाज़िही अक़ी-क़तु.....[1]....
दमुहा बि-दमिही व लहमुहा बि-लहमिही व अ़ज़मुहा बिअ़ज़मिही व जिलदुहा बिजिलदिही व शअ़रुहा बि-शअ़रिही ।[2] इन्नी वज्जहतु वजहि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस समावाति वल अर-ज़ हनीफ़वँ व मा अना मिनल मुशरिकीन । इन-न सलाती व नुसुकी व महया-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आ़-लमी-न ला शरी-क लहू । व बिज़ालि-क उमिरतु व अना अव्वलुल मुसलिमीन । अल्लाहुम-म मिन-क व ल-क ।

---

1. यहाँ बच्चे का नाम लें ।
2. अगर अक़ीक़ा लड़की का करना है तो कहेंगे, <u>अल्लाहुम-म हाज़िही अक़ीक़तु......... दमुहा बि दमिहा व लहमुहा बि-लहमिहा व अज़मुहा बि अज़मिहा व जिलदुहा बिजिलदिहा व शअरुहा बि-शअरिहा ।</u>

''ऐ अल्लाह, यह फ़लाँ का अक़ीक़ा है, इसका ख़ून इस बच्चे के ख़ून के बदले, इसका गोश्त इसके गोश्त के बदले, इसकी हड्डी इसकी हड्डी के बदले, इसकी खाल इसकी खाल के बदले और इसका बाल इसके बाल के बदले है। मैंने अपना मुँह उसकी तरफ़ किया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया हर तरफ़ से यकसू होकर। मैं शिर्क नहीं करता। बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी, मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह, सारे जहाँ के रब, के लिए है। उसका कोई शरीक नहीं है। मुझे तो इसी का हुक्म हुआ है और सबसे पहले सिर झुकानेवाला मैं हूँ। ऐ अल्लाह, यह तेरा ही अता किया हुआ है और तेरे ही लिए है।''

आसमान की तरफ़ निगाह करते वक़्त

۸۸ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝
رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ
اَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ

فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ ______ (الاذکار للنووی)

(88) रब्बना मा ख़लक़्-त हाज़ा बातिला, सुब्हा-न-क फ़क़िना अ़ज़ाबन्नार । रब्बना इन-न-क मन तुदख़िलिन्ना-र फ़क़द अख़ज़ै-तहू, व मा लिज़-ज़ालिमी-न मिन अनसार । रब्बना इन-नना समिअ़ना मुनादिय्यँ युनादी लिल ईमानि अन आ-मिनू बि-रबबिकुम फ़आमन्ना रब्बना फ़ग़फ़िर लना ज़ुनूबना व कफ़-फ़िर अ़न्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना म-अ़ल अबरार । रब्बना व आतिना मा व अ़त-तना अ़ला रुसुलि-क व ला तुख़ज़िना यौमल क़ियामह, इन-न-क ला तुख़लिफ़ुल मीआ़द ।

(अल अज़कार लिन्नव्वी)

"हमारे रब, तूने यह सब बेकार नहीं बनाया है ।

अज़ीम व बरतर है तू! तो तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले । हमारे रब, तूने जिसको आग में डाला, उसे तो रुसवा कर दिया, और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं । हमारे रब, हमने एक पुकारनेवाले को ईमान की तरफ़ बुलाते सुना कि अपने रब पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आए । हमारे रब, अब तू हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर, और हमें वफ़ादारों के साथ (दुनिया से) उठाना । ऐ हमारे रब, तू हमें वे चीज़ें अता कर जिसका वादा तूने अपने रसूलों से किया है और क़ियामत के दिन हमें रुसवा न करना । बेशक तू वादाख़िलाफ़ी नहीं करता ।''

बिजली की कड़क और गरज के मौक़े पर

٨٩ اَللّٰھُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُھْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ ——— (ترمذی، نسائی)

(89) अल्लाहुम-म ला तक़्तुलना बि-ग़-ज़-बि-क व ला तुहलिकना बिअ़ज़ाबि-क व आफ़िना क़ब-ल ज़ालि-क ।   (तिरमिज़ी, नसई)

"ऐ अल्लाह, अपने ग़ज़ब से हमें क़त्ल न करना और न अपने अज़ाब से हमें हलाक करना, ऐसा वक़्त आने से पहले हमें हिफ़ाज़त व सलामती में ले लेना ।"

आँधी आने पर

٩٠ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَخَيْرَ مَا اُرْسِلَتْ
بِهٖ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ (مسلم، ترمذی)

(90) अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क ख़ै-र-हा व ख़ै-र मा फ़ीहा व ख़ै-र मा उरसिलत बिही व अऊ़ज़ु बि-क मिन शर्रिहा व शर्रिमा फ़ीहा व शर्रिमा उरसिलत बिही ।   (मुसलिम, तिरमिज़ी)

"ऐ अल्लाह, मैं माँगता हूँ उसकी भलाई और भलाई

उस चीज़ की जो उसमें हो और भलाई उस चीज़ की जिसके साथ यह भेजी गई हो । और तेरी पनाह चाहता हूँ उसकी बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो उसमें और उस चीज़ की बुराई से जिसके साथ यह भेजी गई हो ।''

٩١ اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ هٰذِهِ الرِّيْحِ وَخَيْرِ مَا فِيْهَا وَخَيْرِ مَا اُمِرَتْ بِهٖ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الرِّيْحِ وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُمِرَتْ بِهٖ ——— (ترمذی)

(91) अल्लाहुम-म इन्ना नस-अलु-क मिन ख़ैरि हाज़ि- हिर्रीहि व ख़ैरि मा फ़ीहा व ख़ैरि मा उमिरत बिही व नऊज़ु बि-क मिन शर्रि हाज़िहिर्रीहि व शर्रिमा फ़ीहा व शर्रिमा उमिरत बिही । (तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे इस हवा की भलाई और जो कुछ इसके अन्दर है उसकी भलाई और जिसका उसे हुक्म मिला है उसकी भलाई चाहता हूँ । और इस हवा की बुराई से और जो कुछ इसके अन्दर है उसकी बुराई से

और जिसका इसे हुक्म मिला है उसकी बुराई से महफ़ूज़ रहने के लिए मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ।''

बारिश होने पर

٩٢ اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَّافِعًا ـــــــــ (ابوداؤد)

(92) अल्लाहुम-म सय्यिबन नाफ़िआ ।

(अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह, इसको मूसलाधार और नफ़ाबख़्श बारिश बना ।''

नया चाँद देखने पर

٩٣ اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ ـــــــــ (ترمذی، احمد)

(93)अल्लाहुम-म अहिल्लहू अलैना बिल अमनि वल ईमानि वस्सलामति वल इसलामि रब्बी व रब्बुकल्लाह । **(तिरमिज़ी, अहमद)**

"ऐ अल्लाह, तू यह चाँद हम पर अम्न व ईमान और सलामती और इस्लाम के साथ निकाल। ऐ चाँद, मेरा और तेरा रब अल्लाह ही है।"

आईना देखते वक़्त

٩٤ اَللّٰهُمَّ كَمَا حَسَّنْتَ خَلْقِيْ فَحَسِّنْ خُلُقِيْ ــــ (ابن السنی)

(94) अल्लाहुम-म कमा हस्सन-त ख़लक़ी फ़हस्सिन ख़ुलुक़ी। **(इब्नुस्सनी)**

"ऐ अल्लाह, जिस तरह तूने मेरी सूरत अच्छी बनाई, मेरी सीरत भी अच्छी बना दे।"

बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त

٩٥ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ______________ (ترمذی، ابن ماجہ، حاکم)

(95) ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह-यी व युमीतु व हु-व हय्युल ला यमूतु बियदिहिल ख़ैरु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर ।

(तिरमिज़ी, इब्ने माजा, हाकिम)

''अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की सारी सल्तनत है । और उसी के लिए तारीफ़ें हैं । जिलाता और मारता है । वह ज़िन्दा जावेद है, उसे मौत नहीं आती । उसी के हाथ में सारी भलाई है और उसे हर चीज़ पर कुदरत हासिल है ।''

पेशाब व पाख़ाना के लिए जाने से पहले

(٩٦) اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ .

______________ (بخاری، مسلم، ترمذی، ابن ماجہ)

(96) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल ख़ुबसि वल ख़बाइस ।

(बुख़ारी, मुसलिम, तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

''ऐ ख़ुदा मैं शैतान मर्दों और औरतों से तेरी पनाह चाहता हूँ ।''

पेशाब-पाख़ाने से फ़ारिग़ होने के बाद

۹۷ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ. (ابن ماجہ)

(97) अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी अज़-ह-ब अ़न्निल अज़ा व आ़फ़ानी । (इब्ने माजा)

''सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिसने मुझसे तकलीफ़ दूर कर दी और सलामती बख़्शी ।''

۹۸ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذَاقَنِیْ لَذَّتَهٗ وَاَبْقٰی مِنِّیْ قُوَّتَهٗ وَاَذْهَبَ عَنِّیْ اَذَاهُ غُفْرَانَكَ ______ (ابن السنی، عدۃ الحصن والحصین)

(98) अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी अज़ा-क़नी लज़्-ज़-त-हू व अबक़ा मिन्नी कुव्व-तहू व अज़-ह-ब अ़न्नी अज़ाहु ग़ुफ़रा-न-क ।

(इब्नुस्सनी, इद्दतुल हिसनु हसीन)

''सारी हम्द व सना अल्लाह के लिए है, जिसने मुझे खाने की लज़्ज़त चखाई और उसकी कुव्वत मुझमें बाक़ी रखी और तकलीफ़ देनेवाली चीज़ को मुझसे दूर फ़रमाया । ऐ ख़ुदा मैं तेरी बख़्शिश और मग़फ़िरत का तालिब हूँ ।''

कपड़ा पहनते वक़्त

۹۹ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیٰوتِیْ ______ (ترمذی، ابن ماجہ)

(99) अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी कसानी मा

उवारी बिही औरती व अ-त-जम्मलु बिही फ़ी हयाती ।

(तिरमिज़ी, इब्न माजा)

"सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिसने मुझे पहनाया जिससे मैंने अपनी शर्मगाह को छुपाया और इससे मैं अपनी ज़िन्दगी में ज़ीनत (सौंदर्य) हासिल करता हूँ।"

١٠٠ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ اَسْئَلُكَ خَيْرَهُ وَخَيْرَ
مَا صُنِعَ لَهُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ. (ترمذی، ابوداؤد)

(100) अल्लाहुम-म लकल हम्दु अन-त कसौ-तनीहि अस-अलु-क ख़ै-रहू व ख़ै-र मा सुनिअ़ लहू व अऊज़ु बि-क मिन शर्रिही व शर्रि मा सुनिअ़ लहू ।

(तिरमिज़ी, अबू दाऊद)

"ऐ अल्लाह, तेरे ही लिए हम्द है । तूने मुझे पहनाया, तुझसे दरख़्वास्त करता हूँ इसकी भलाई और

उस चीज़ की भलाई की जिस ग़रज़ के लिए यह बनाया गया है । और तुझसे पनाह माँगता हूँ इसकी बुराई से बचने के लिए और उस चीज़ की बुराई से बचने के लिए जिस ग़रज़ के लिए यह बनाया गया है ।''

खाना जब क़रीब लाया जाए

١٠١ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْمَا رَزَقْتَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ، بِسْمِ اللّٰهِ (ابن السنى)

(101) अल्लाहुम-म बारिक लना फ़ीमा र-ज़क़्-तना व क़िना अज़ाबन नार, बिसमिल्लाह ।

(इब्नुस्सनी)

''ऐ अल्लाह, जो कुछ रोज़ी तूने हमारे लिए मुहय्या की, उसमें हमारे लिए बरकत अता कर और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा, अल्लाह के नाम से ।''

खाना-पीना शुरू करते वक़्त

١٠٢ بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ.

(102) बिसमिल्लाहि व अ़ला ब-र-कतिल्लाह ।

''अल्लाह के नाम के साथ खाता हूँ और अल्लाह ही की बरकत की उम्मीद रखता हूँ ।''

खाना शुरू करते वक़्त अगर बिसमिल्लाह भूल जाए तो खाने के बीच यह कहे —

١٠٣ بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ ——— (مسند احمد، بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی)

(103) बिसमिल्लाहि अव-व-लहू व आख़ि-रह ।

(मुसनद अहमद, बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

''अल्लाह के नाम से इसके शुरू में भी और आख़िर में भी ।''

खाने से फ़ारिग़ होकर

١٠٤ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا ——— (بخاری)

(104) अलहम्दु लिल्लाहि हमदन कसीरन तय्यिबम मुबा-र-कन फ़ीहि ग़ै-र मकफ़ीयिवँ व ला मुवद-दईवँ व ला मुसतग़नन अ़नहु रब्बना ।

(बुख़ारी)

''अल्लाह के लिए हम्द है, ऐसी हम्द जो ज़्यादा हो, पाकीज़ा हो, लगातार बढ़नेवाली हो, जिससे कभी तबीअत न भरे, न वह छोड़ी जाए, न उससे बेनियाज़ हुआ जा सके, ऐ हमारे रब!''

١٠٥ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ.

(ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ، احمد)

(105) अलहम्दु लिल्लाहिल-लज़ी अतअ़-म-ना व सक़ाना व ज-अ़-लना मिनल मुसलिमीन ।

(अबू दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, अहमद)

''सारी हम्द व सना अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें खिलाया, और पिलाया और हमें मुसलमान बनाया ।''

(١٠٦) اَللّٰهُمَّ اَطْعَمْتَ وَاَسْقَيْتَ وَاَغْنَيْتَ وَاَقْنَيْتَ وَهَدَيْتَ وَ
اَحْيَيْتَ فَلَكَ الْحَمْدُ عَلٰى مَآ اَعْطَيْتَ ______ (احمد، نسائی)

(106) अल्लाहुम-म अतअ़म-त व असक़ै-त व अग़नै-त व अक़नै-त व हदै-त व अहयै-त फ़-ल-कल हम्दु अ़ला मा अअ़तै-त । **(अहमद, नसई)**

''ऐ अल्लाह, तूने ही हमें खिलाया, तूने ही हमें पिलाया, तूने ही हमें बेनियाज़ किया, तूने ही खज़ाना दिया, तूने ही हिदायत दी और तूने ही ज़िन्दगी दी, अतः हम्द व शुक्र तेरे ही लिए है, उन सब नेमतों पर जो तूने अता कीं ।''

दूध पीने पर

(١٠٧) اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ. (احمد، ابوداؤد، ترمذی، ابن ماجہ)

(107) अल्लाहुम-म बारिक लना फ़ीहि व ज़िदना मिनहु ।

(अहमद, अबू दाऊद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

"ऐ अल्लाह, हमारे लिए इस दूध में बरकत दे और हमें ज़्यादा अता कर।"

खिलानेवाले को दुआ

۱۰۸ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ فَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ ـ (مسلم)

(108) अल्लाहुम-म बारिक लहुम फ़ीमा रज़क़-तहुम फ़ग़फ़िर लहुम वर-हमहुम। (मुसलिम)

"ऐ अल्लाह तू उस रिज़्क़ में उन्हें बरकत अता कर जो उनको दिया है और उनको बख़्श दे और उनपर रहम कर।"

۱۰۹ اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِيْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِيْ ـ (مسلم)

(109) अल्लाहुम-म अतइम मन अत-अ़-म-नी वसक़ि मन सक़ानी। (मुसलिम)

"ऐ अल्लाह ! तू उसे खिला जिसने मुझे खिलाया और उसे पिला जिसने मुझे पिलाया।"

सफ़र की दुआ

(110) رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ
وَّاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِیْرًا ﴿٨٠﴾ ــــ (بنی اسرائیل : ٨٠)

(110) रब्बि अदख़िलनी मुद-ख़-ल सिदक़िवँ व अख़रिजनी मुख़-र-ज सिदक़िवँ वजअ़ल्ली मिल-लदुन-क सुल्तानन नसीरा। (क़ुरआन, 17 : 80)

''मेरे रब, तू मुझे पसंदीदा तौर पर दाख़िल कर और पसंदीदा तौर पर निकाल, और अपनी तरफ़ से मुझे मददगार ताक़त दे।''

रुख़सत करते वक़्त

(111) اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِیْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِیْمَ عَمَلِكَ.

(ابوداؤد، ترمذی، احمد) ــــ

(111) असतौदिउ़ल्ला-ह दी-न-क व अमा-न-

त-क व ख़वाती-म अ़-म-लिक ।

.(अबू दाऊद, तिरमिज़ी, अहमद)

"मैं तेरे दीन, तेरी अमानत और तेरे आमाल के अन्जाम को ख़ुदा की हिफ़ाज़त में देता हूँ।"

﴿١١٢﴾ زَوَّدَكَ اللّٰهُ التَّقْوٰى وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَيَسَّرَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُ مَاكُنْتَ ______ (ترمذی، داری، حاکم)

(112) ज़व्व-द-कल्लाहुत-तक़्वा व ग़-फ़-र ज़म-ब-क व यस-स-र लकल-ख़ै-र हैसु माकुन-त ।

(तिरमिज़ी, दारमी, हाकिम)

"अल्लाह तक़्वा (परहेज़गारी) को तुम्हारा सामाने सफ़र बनाए और तुम्हारे गुनाह को बख़्श दे और तुम जहाँ कहीं भी हो, भलाई को तुम्हारे लिए आसान कर दे।"

सवार होने पर

١١٣ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ، سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا
هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ، وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ . اَللّٰهُمَّ
اِنَّا نَسْئَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰی وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰی،
هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ
فِی السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِی الْاَهْلِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ
السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْٓءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ. اٰئِبُوْنَ
تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ ــــ (مسلم، ترمذی، ابوداؤد، احمد)

(113) अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, सुबहानल्लज़ी सख़्ख़-र-लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनी-न व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून । अल्लाहुम-म इन्ना नस-अलु-क फ़ी स-फ़-रना हाज़ल-बिर-र वत-तक़वा व मिनल

अ़-मलि मा- तरज़ा हव्विन अ़लैना स-फ़-रिना हाज़ा व अतवि अ़न्ना बुअ़दहू । अल्लाहुम-म अनतस-साहिबु फ़िस-स-फ़रि वल-ख़ली-फ़तु फ़िल अहलि । अल्लाहुम-म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिवँ-वअ़साइस-स-फ़रि व कआ-बतिल मन्ज़रि व सूइल-मुन-क़-लबि फ़िलमालि वल- अहलि । आइबू-न ताइबू-न आ़बिदू-न लिरब्बिना हामिदून ।

(मुसलिम, तिरमिज़ी, अबू दाऊद, अहमद)

''अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, क्या ही अज़मतवाला है वह ज़िसने इसे हमारे क़ाबू में कर दिया, वरना हम तो ऐसे न थे कि इसे क़ाबू में कर सकते । और यक़ीनन हम अपने रब की तरफ़ लौटनेवाले हैं । ऐ अल्लाह, हम अपने इस सफ़र में तुझसे नेकी, तक़्वा और ऐसे अमल की तौफ़ीक़ चाहते हैं जिससे तू ख़ुश हो । ऐ अल्लाह, तू हमारे इस सफ़र को हमपर आसान कर दे । और इसकी दूरी और

फ़ासले को हमारे लिए कम कर दे । ऐ अल्लाह, तू ही सफ़र का साथी है और घरवालों की मेरे पीछे सरपरस्ती करनेवाला है । ऐ अल्लाह, मैं सफ़र की मुश्किलों, बुरे मन्ज़र को देखने और लौटकर माल और बीवी-बच्चों को बुरी हालत में पाने से बचने के लिए तेरी पनाह चाहता हूँ । हम लौटनेवाले, तौबा करनेवाले, इबादत करनेवाले और अपने रब की तारीफ़ बयान करनेवाले हैं ।''

﴿١١٤﴾ سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿١٣﴾ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾ _______ (الزخرف : ١٣، ١٤)

(114) सुबहानल्लज़ी सख़्ख़-र-लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़रिनी-न व इन्ना इला रब्बिना लमुन-क़लिबून। (क़ुरआन, 43:13,14)

''क्या ही शानवाला है वह जिसने इसे हमारे क़ाबू में कर दिया, वरना हम तो ऐसे न थे कि इसे क़ाबू में कर सकते और यक़ीनन हम अपने रब की तरफ़ लौटनेवाले हैं ।''

घर से बाहर निकलते वक़्त

١١٥ بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ. اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ
نَّزِلَّ اَوْ نَضِلَّ اَوْ نَظْلِمَ اَوْ نُظْلَمَ اَوْ نَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا ـــــ (مسلم)

(115) बिसमिल्लाहि तवक्कलतु अ़-लल्लाहि, अल्लाहुम-म इन्ना नऊ़ज़ुबि-क मिन अन-नज़िल-ल औ-नज़िल-ल औ-नज़लि-म औ-नुज़- ल-म औ-नज-ह-ल औ युज-ह-ल अ़लैना । (मुसलिम)

"अल्लाह का नाम लेकर निकलता हूँ और अल्लाह पर भरोसा करता हूँ । ऐ अल्लाह, हम इससे तेरी पनाह चाहते हैं कि हम फिसल जाएँ या गुमराह हो जाएँ, या किसी पर ज़ुल्म करें या हम पर ज़ुल्म हो या हम नादानी की बात करें या हमारे साथ कोई जिहालत करे ।"

١١٦ بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ .
ـــــــــ (ابوداؤد)

(116) बिसमिल्लाहि तवक्कलतु अ़-लल्लाहि ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह।(अबू दाऊद)

''अल्लाह का नाम लेकर निकलता हूँ और अल्लाह ही पर भरोसा करता हूँ। एक हालत का दूसरी हालत में बदलना और उसकी कुव्वत मिलना अल्लाह की मदद के बिना मुमकिन नहीं।''

मंज़िल पर उतरने पर

۱۱۷ اَعُوْذُ بِكَلِمٰتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ .

(مسلم، موطا، ترمذی، نسائی، ابن ماجہ، احمد، ابن السنی)

(117) अऊ़ज़ुबि-कलिमातिल्लाहित-ताम्माति मिन शर्रिमा ख़-लक़।

(मुसलिम, मुवत्ता, तिरमिज़ी, नसई, इब्ने माजा, अहमद, इब्नुस्सनी)

''मैं अल्लाह के हर हाल में जारी होनेवाले कलिमात

के वसीले से उसकी पैदा की हुई चीज़ों की बुराइयों से पनाह माँगता हूँ।''

(۱۱۸) رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝ (المؤمنون : ۲۹)

(118) रब्बि अनज़िल्नी मुन्ज़लम-मुबारकवँ व अन-त ख़ैरुल मुनज़िलीन। (क़ुरआन, 23:29)

''मेरे रब, मुझे मुबारक जगह उतार और तू बेहतर उतारनेवाला है।''

आबादी को देखकर

(۱۱۹) اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَآ اَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْاَرْضِيْنَ السَّبْعِ وَمَآ اَقْلَلْنَ وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَآ اَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ نَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ اَهْلِهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا ــــــــ (نسائی، حاکم)

(119) अल्लाहुम-म रब्बस-समावातिस-सबइ व मा अज़लल-न व रब्बल अरज़ीनस-सबइ व मा

अक़लल-न व रब्बश-शयातीनि व मा अज़लल-न व रब्बर्रियाहि व मा ज़रै-न नसअलु-क ख़ै-र हाज़िहिल क़र-यति व ख़ै-र अहलिहा व ख़ै-र मा फ़ीहा व नऊज़ुबि-क मिन शर्रिहा व शर्रि अहलिहा व शर्रि मा फ़ीहा । (नसई, हाकिम)

"ऐ अल्लाह, सातों आसमानों के रब, और जो उनके साए में है उसके, और सात ज़मीनों के रब और जो उनके ऊपर है उसके, और शैतानों के रब और जिनको उन्होंने बहकाया उनके और हवाओं के रब और जो कुछ उन्होंने तितर-बितर किया उनके रब, हम तुझसे इस बस्ती में जो भलाई है उसे और इसके बाशिन्दों में जो भलाई है उसे और जो भलाई उसके अन्दर है उसे चाहते हैं । और इसकी बुराइयों से और इसके बाशिन्दों में जो बुराई है उससे और जो बुराई उसके अन्दर है उससे बचने के लिए तेरी पनाह चाहते हैं ।"

सफ़र से लौटने पर

١٢٠ آئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ ـــــــــ (مسلم)

(120) आइबू-न-ताइबू-न आबिदू-न लिरब्बिना हामिदून । (मुसलिम)

''हम पलटते हैं (खुदा की ओर), तौबा करते और बन्दगी करते हैं और अपने रब की तारीफ़ करते हैं ।''

बीमारी और मौत

ग़म और फ़िक्र के मौक़े पर

١٢١ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ نَاصِيَتِیْ بِيَدِكَ مَاضٍ فِیَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ فِیَّ قَضَآؤُكَ. اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوِ اسْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِیْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ

الْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ رَبِيْعَ قَلْبِىْ وَنُوْرَ بَصَرِىْ وَجَلَآءَ حُزْنِىْ وَذَهَابَ هَمِّىْ

(احمد، الحاکم)

(121) अल्लाहुम-म इन्नी अ़ब्दु-क वबनु अ़बदि-क वबनु अ-मति-क नासियती बियदि-क माज़िन फ़ी-य हुक्मु-क अ़द्लुन फ़ी-य क़ज़ाउ-क । असअलु-क बिकुल्लि इसमिन हु-व ल-क सम्मय-त बिही नफ़-स-क औ अन्ज़ल-तहू फ़ी किताबि-क औ अ़ल्लम-तहू अ-ह-दम मिन ख़लक़ि-क अविस तासर-त बिही फ़ी इलमिल-ग़ैबि इन-द-क अन-तज-अ़लल क़ुरआनल अ़ज़ी-म रबीअ़ क़लबी व नू-र ब-स-री व जला-अ हुज़नी व ज़हा-ब हम्मी ।

(अहमद, हाकिम)

''ऐ अल्लाह मैं तेरा बन्दा हूँ, और तेरे ग़ुलाम और तेरी बान्दी का बेटा हूँ । मेरी पेशानी तेरे क़ब्ज़े में है । मुझ पर तेरा हुक्म लागू है । मेरे बारे में तेरा फ़ैसला इंसाफ़ भरा है । मैं तुझसे गुज़ारिश करता हूँ तेरे उस नाम का वास्ता देकर जिससे तूने अपने आपको परिचित

कराया, या अपनी किताब में नाज़िल किया, या अपनी मख़लूक़ में से किसी को सिखाया, या अपने पास ग़ैब के इल्म में उसे महफ़ूज़ रखा है, गुज़ारिश है इसकी कि तू कुरआन अज़ीम को मेरे दिल की बहार और मेरी आँख का नूर बना दे और मेरे ग़म को दूर करनेवाला और मेरी परेशानियों का इलाज बना दे।''

١٢٢ إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ــــ اَللّٰهُمَّ عِنْدَكَ اَحْتَسِبُ مُصِيْبَتِيْ فَاْجُرْنِيْ فِيْهَا وَاَبْدِلْنِيْ مِنْهَا خَيْرًا ــــــ (ترمذی، ابوداؤد، مسلم)

(122) इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न। अल्ला-हुम-म इन-द-क अह-तसिबु मुसीबती फ़ाजुरनी फ़ीहा व अबदिलनी मिन्हा ख़ैरा।

(तिरमिज़ी, अबू दाऊद, मुसलिम)

''बेशक हम अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ़ जानेवाले हैं। ऐ अल्लाह, मैं तुझसे अपनी मुसीबत के बदले सवाब का चाहनेवाला हूँ तो तू इसमें मुझे सवाब

दे । और इस मुसीबत के बदले मुझे अच्छी चीज़ अता कर ।''

(١٢٣) حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا. (ترمذی، احمد، بخاری)

(123) हसबु नल्लाहु व निअ़मल वकीलु अ़-लल्लाहि तवक-कलना ।

(तिरमिज़ी, अहमद, बुख़ारी)

''हमारे लिए काफ़ी है अल्लाह और क्या ही अच्छा काम बनानेवाला है वह (जिसके हवाले अपना काम किया जाए) । अल्लाह ही पर हमने भरोसा किया ।''

दुखी व्यक्ति को देखकर

(١٢٤) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا (ترمذی، ابن ماجہ)

(124) अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आ़फ़ानी मिम्मब-तला-क बिही व फ़ज़-ज़-लनी अ़ला कसीरिम मिम्मन

ख़-ल-क़ तफ़्ज़ीला ।   (तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

''सना व शुक्र अल्लाह के लिए है, जिसने मुझे इस मुसीबत से बचाए रखा जिसमें उसने तुझे मुबतिला किया । और अपनी बहुत-सी मख़लूक़ पर मुझे फ़ज़ीलत और बड़ाई दी ।''

नोट : यह दुआ धीरे से पढ़ी जाए कि मुसीबत में घिरा आदमी सुन न सके, वरना इससे उसके जज़बात को ठेस पहुँचेगी ।

बीमार का हाल पूछते वक़्त

(١٢٥) لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ . لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ .

(بخاری، نسائی)

(125) ला बा-स तहूरुन इंशाअल्लाह । ला बा-स तहूरुन इंशा-अल्लाह ।   (बुख़ारी, नसई)

''कोई डर और भय की बात नहीं । यह बीमारी

इंशाअल्लाह (गुनाहों को) पाक करनेवाली है । कोई डर और भय की बात नहीं है यह बीमारी इंशाअल्लाह पाक करनेवाली है ।''

١٢٦ اَللّٰهُمَّ اشْفِ عَبْدَكَ يَنْكَأُ لَكَ عَدُوًّا اَوْ يَمْشِيْ لَكَ اِلٰى جَنَازَةٍ.

(ابوداؤد، صحیح علی شرط مسلم)

(126) अल्लाहुम-मशफ़ि अ़ब-द-क यन्कउ ल-क अ़दुव्वन औ यमशी ल-क इला जनाज़तिन ।

(अबू दाऊद, मुसलिम की शर्त पर सही)

''ऐ अल्लाह, अपने बन्दे को शिफ़ा दे कि तेरे किसी दुश्मन को पछाड़े या तेरे लिए किसी जनाज़े के साथ चले ।''

١٢٧ اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً لَّا يُغَادِرُ سَقَمًا

(بخاری، مسلم)

(127) अज़हिबिल बा-स रब्बन-नासि वशफ़ि

अन्तश्-शाफ़ी ला शिफ़ा-अ इल्ला शिफ़ाउ-क शिफ़ाअल्ला युग़ादिरु सक़मा। (बुख़ारी, मुसलिम)

"तकलीफ़ को दूर कर ऐ लोगों के रब, तू ही तन्दुरुस्ती देनेवाला है। तन्दुरुस्ती तो बस तू ही दे सकता है। ऐसी तन्दुरुस्ती दे जो बीमारी को न छोड़े।"

मौत की तकलीफ़ के वक़्त

١٢٨ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاَلْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى. (بخاری مسلم)

(128) अल्लाहुम-मग़फ़िरली वरहमनी व अल-हिक़नी बिर्रफ़ीक़िल अ-अला। (बुख़ारी, मुसलिम)

"ऐ अल्लाह, मुझे माफ़ कर दे। मुझ पर रहम कर और मुझे रफ़ीक़े आला से मिला दे।"

١٢٩ اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ. (ترمذی، ابن ماجہ)

(129) अल्लाहुम-म अइन्नी अला ग़-मरातिल

मौत्ति व सक्रातिल मौत। (तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

"ऐ अल्लाह मौत की सख़्तियों और मौत की बेहोशियों में मेरी मदद कर।"

जनाज़े की नमाज़

पहली तकबीर के बाद

(١٣٠) سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ.

(130) सुबहान-क अल्लाहुम-म व बि-हमदि-क व तबा-र-कसमु-क व तआला जद्दु-क व जल-ल सनाउ-क व ला इला-ह ग़ैरु-क ।

"क्या ही अज़ीम (महान) है तू ऐ अल्लाह! तारीफ़ व शुक्र है तेरे लिए, बड़ा ही बरकतवाला है तेरा नाम, बुलन्द व ऊँची है तेरी शान, ऊँची और नुमायाँ है तेरी

तारीफ़, और कोई माबूद नहीं तेरे सिवा ।''

दूसरी तकबीर के बाद

दुरूद शरीफ़ पढ़ें (देखें दुआ नं० 60-61)

तीसरी तक़बीर के बाद

अगर मय्यत बालिग़ मर्द या औरत की हो—

(١٣١) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ.

(131) अल्लाहुम-मग़फ़िर लि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-क-रिना व उनसाना, अल्लाहुम-म मन अहयय-तहू मिन्ना फ़-अह्यिही अ़लल इसलामि व मन तवफ़्फ़ै-तहू मिन्ना फ़-तवफ़्फ़हू अ़लल ईमान ।

''ऐ अल्लाह, हमारे ज़िन्दा व मुर्दा, हमारे मौजूद

और ग़ैर मौजूद, हमारे छोटे और बड़े, हमारे मर्द और औरत सबकी मग़फ़िरत फ़रमा। ऐ अल्लाह, हममें से जिस किसी को तू ज़िन्दा रखे उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रखना और जिस किसी को हममें से मौत दे उसे ईमान की हालत में मौत देना।''

अगर मय्यत नाबालिग़ लड़के की हो —

١٣٢ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَآ اَجْرًا وَّ ذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا.

(132) अल्लाहुम्मज-अलहू लना फ़रतवँ वज-अलहु लना अजरवँ व ज़ुख़रवँ वजअलहु लना शाफ़ि-अवँ व मुशफ़्फ़आ।

''ऐ अल्लाह, इस बच्चे को हमारे आगे पहुँचकर सामान करनेवाला बना, इसे हमारे लिए अज्र व सवाब का ख़ज़ाना बना, और इसे हमारे लिए शफ़ाअत करनेवाला बना दे और इसकी शफ़ाअत क़बूल कर।''

अगर मय्यत नाबालिग़ लड़की की हो —

١٣٣ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً.

(133) अल्लाहुम-मज-अ़लहा लना फ़रतवँ वज-अ़लहा लना अजरवँ व ज़ुख़रवँ वजअ़लहा लना शाफ़िअ़तवँ व मुशफ़्फ़अ़ह।

चौथी तकबीर

اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहकर सलाम फेर दे।

मय्यत को क़ब्र में रखते वक़्त

١٣٤ بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

(احمد، ابن ماجه، ترمذی)

(134) बिसमिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ।

(अहमद, इब्ने माजा, तिरमिज़ी)

''अल्लाह के नाम से और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन के मुताबिक़ यह हुक्म अंजाम दे रहा हूँ ।''

दफ़न के वक़्त

۱۳۵ مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ ○
بِسْمِ اللّٰهِ وَفِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَعَلَىٰ مِلَّةِ رَسُولِ اللّٰهِ ــــــ (حاکم، احمد)

(135) मिनहा ख़लक़नाकुम व फ़ीहा नु ईदुकुम व मिनहा नुख़रि-जुकुम ता-रतन उख़रा । बिस-मिल्लाहि व फ़ी सबी- लिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाह ।

''इसी (ज़मीन) से हमने तुमको पैदा किया और

फिर इसी में तुम्हें लौटाते हैं और दूसरी बार तुम्हें इसी से निकालेंगे ।'' (कुरआन)

''अल्लाह के नाम से और अल्लाह ही की राह में और अल्लाह के रसूल *(सल्ल०)* के दीन के मुताबिक़ यह फ़र्ज़ अंजाम दे रहा हूँ ।'' (हाकिम, अहमद)

क़ब्रों की ज़ियारत के मौक़े पर

(١٣٦) اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَ اِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ، نَسْئَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ.

(مسلم، نسائی، ابن ماجہ، احمد)

(136) अस्सलामु अलैकुम अहलद्दियारि मिनल **मोमिनी-न** वल-मुसलिमी-न व इन्ना इंशाअल्लाहु बिकुम लाहिक़ू-न, नस-अलुल्ला-ह लना व लकुमुल आफ़ियह । (मुसलिम, नसई, इब्ने माजा, अहमद)

''सलाम हो तुमपर ऐ इस दियार के ईमानवालो और

इस्लामवालो और हम भी इंशाअल्लाह आख़िरकार तुमसे मिलनेवाले हैं। हम अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए सुकून चाहते हैं।''

۱۳۷ اَلسَّلَامُ عَلٰى اَهْلِ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَ يَرْحَمُ اللّٰهُ الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَاْخِرِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ (مسلم، نسائی)

(137) अस्सलामु अ़ला अहलिद दियारि मिनल मोमिनी-न वल-मुसलिमी-न व यर-हमुल्लाहुल मुस्तक़-दिमी-न मिन्ना वलमुस्ताख़िरी-न व इन्ना इंशाअल्लाहु बिकुम लाहिक़ून। (मुसलिम, नसई)

''सलाम हो तुमपर ऐ इस दियार के ईमानवालो और इस्लामवालो, और अल्लाह रहम करे हमारे अगले और हमारे पिछले लोगों पर। हम भी इंशाअल्लाह तुम्हारे पास पहुँचनेवाले हैं।''

जामेअ दुआएँ

١٣٨ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○
وَتُبْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ○ (البقرة: ١٢٧، ١٢٨)

(138) रब्बना तक़ब्बल मिन्ना, इन-न-क अन-तस्समीउ़ल-अ़लीम । व तुब अ़लैना इन-न-क अन्तत-तव्वा-बुर्रहीम । (कुरआन, 2:127-128)

''हमारे रब, हमारी ओर से क़बूल कर, बेशक तू ख़ूब सुनता, जानता है । और हम पर ध्यान दे, बेशक तू ध्यान देनेवाला, निहायत रहम करनेवाला है ।''

١٣٩ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا
لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ○ (الفرقان: ٧٤)

(139) रब्बना हब-लना मिन अज़्वाजिना व ज़ुर्रीयातिना क़ुर-र-त अअ़्युनिवँ वज-अ़लना लिल मुत-तक़ी-न इमामा । (कुरआन, 25:74)

"हमारे रब, हमें हमारी अपनी बीवियों और अपनी औलाद से आँखों की ठण्डक दे और हमें तक़्वावाले लोगों का इमाम बना दे।"

(١٤٠) رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ○

(آل عمران : ٥٣)

(140) रब्बना आमन्ना बिमा अन्ज़ल-त वत-त-बअ़-नर-रसू-ल फ़क्-तुबना म-अ़श-शाहिदीन।

(क़ुरआन, 3:53)

"हमारे रब, तूने जो कुछ उतारा हम उसपर ईमान ले आए और हमने रसूल *(सल्ल०)* की पैरवी इख़्तियार की। तो तू हमें गवाही देनेवालों में लिख ले।"

(١٤١) فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ تَوَفَّنِيْ
مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ○

(يوسف : ١٠١)

(141) फ़ातिरस्समावाति वल अरज़ि अन-त वलीई फ़िद्दुन्या वल-आख़ि-रति तवफ़्फ़नी मुसलिमवँ

व अलहिक़नी बिस्सालिहीन। (क़ुरआन, 12:101)

''आसमानों और ज़मीन के ईजाद करनेवाले, दुनिया और आख़िरत में तू ही मेरा सरपरस्त आक़ा है । तू मुझे इस हाल में उठा कि मैं मुसलिम (फ़रमाँबरदार) हूँ और मुझे नेक लोगों के साथ मिला ।''

١٤٢ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝ (آل عمران : ٨، ٩)

(142) रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना बअ़-द इज़ हदैतना व हब-लना मिल-लदुन-क रह-मतन इन-न-क अनतल वह्हाब । रब्बना इन-न-क जामिउन्नासि लियौमिल्ला-रै-ब फ़ीह । इन्नल्ला-ह ला युख़लिफ़ुल मीआ़द । (क़ुरआन, 3:8-9)

''हमारे रब, जबकि तूने हमें हिदायत दी है तो

इसके बाद हमारे दिलों को टेढ़ में मुबतिला न करना और हमें अपने यहाँ से रहमत अता कर, यक़ीनन तू बड़ा अता करनेवाला है । हमारे रब, तू लोगों को एक दिन इकट्ठा करेगा जिसके आने में कोई शक नहीं, बेशक अल्लाह वादाख़िलाफ़ी नहीं करेगा ।''

١٤٣ رَبَّنَآ أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ (البقرہ: ٢٥٠)

(143) रब्बना अफ़रिग़ अलैना सबरवँ व सब्बित अक़दा-मना वन-सुरना अलल क़ौमिल काफ़िरीन ।

(क़ुरआन, 2:250)

''हमारे रब, हमपर सब्र उड़ेल दे, और हमारे क़दम जमा दे और काफ़िर क़ौम पर हमें ग़लबा अता कर ।''

١٤٤ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ (الممتحنہ: ٥)

(144) रब्बना ला तजअ़लना फ़ित-नतल लिल्लज़ी-न क-फ़रू वग़फ़िर-लना रब्बना, इन-न-क अन्तल अ़ज़ीज़ुल हकीम । (कुरआन, 60:5)

"हमारे रब, हमें उन लोगों के लिए जिन्होंने कुफ़्र इख़तियार किया फ़ितना न बना और हमारे रब, हमारी मग़फ़िरत फ़रमा, यक़ीनन तू जबरदस्त, निहायत हिकमतवाला है ।"

١٢٥ اَللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ
تَشَآءُ ۚ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ اِنَّكَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۫ وَ
تُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۫ وَتَرْزُقُ مَنْ
تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ ——— (آل عمران: ٢٦، ٢٧)

(145) अल्लाहुम-म मालिकल-मुलकि तूतिल मुल-क मन तशाउ व तनज़िउ़ल मुल-क मिम्मन तशाउ

व तुइज़्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन तशाउ, बि-यदिकल-ख़ैर । इन-न-क अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर । तूलिजुल-लै-ल फ़िन-नहारि व तूलिजुन-नहा-र फ़िल-लैलि व तुख़रिजुल हय-य मिनल मय्यिति व तुख़रिजुल मय्यि-त मिनल हय्यि व तरज़ुक़ु मन तशाउ बिग़ैरि हिसाब । **(क़ुरआन, 3: 26-27)**

''ऐ अल्लाह, बादशाही के मालिक, तू जिसे चाहे हुकूमत दे और जिससे चाहे हुकूमत छीन ले और जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसको चाहे रुसवा कर दे । तेरे ही हाथ में भलाई है । बेशक तुझे हर-चीज़ पर क़ुदरत हासिल है । तू रात को दिन में पिरोता है और दिन को रात में पिरोता है । तू मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है, और जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है ।''

(١٤٦) اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ ــــــــــ (ترمذی، احمد، حاکم)

(146) अल्लाहुम-मकफ़िनी बि-हलालि-क अ़न हरामि-क व अग़निनी बि-फ़ज़लि-क अ़म्मन सिवाक।

(तिरमिज़ी, अहमद, हाकिम)

''ऐ अल्लाह, हलाल चीज़ अता करके मुझे हराम से बचा और अपना फ़ज़्ल फ़रमाकर मुझे अपने अल्लाह के सिवा हर चीज़ से बेनियाज़ कर दे।''

(١٤٧) اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِسَمْعِيْ وَبَصَرِيْ وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنِّيْ وَانْصُرْنِيْ عَلٰى مَنْ ظَلَمَنِيْ وَخُذْ مِنْهُ بِثَارِيْ ــــــــ (ترمذی، حاکم)

(147) अल्लाहुम-म मततिअ़-नी बि-समई व ब-सरी वजअ़ल-हुल वारि-स मिन्नी वनसुरनी अ़ला मन ज़-ल-मनी व ख़ुज़-मिनहु बिसारी।

(तिरमिज़ी, हाकिम)

''ऐ अल्लाह, मेरे कान और मेरी आँख को सलामत

रख कि मैं इनसे फ़ायदा उठा सकूँ । और इनके ख़ैर को बाक़ी रख । और जो शख़्स मुझपर ज़ुल्म ढाए उसके मुक़ाबिले में तू मेरी मदद कर और उससे मेरा बदला ले ।''

۱۴۸ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ (بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی، احمد)

(148) अल्लाहुम-म रब्बना आतिना फ़िद्दुनया ह-स-न-तवँ व फ़िल आख़ि-रति ह-स-न-तवँ व क़िना अज़ाबन्नार ।

(बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद, नसई, अहमद)

''ऐ अल्लाह, ऐ हमारे रब, हमें दुनिया में भी भलाई अता कर और आख़िरत में भी भलाई अता कर और आग के अज़ाब से हमें बचा ले ।''

۱۴۹ اَللّٰهُمَّ اِنِّىٓ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ.

(149) अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-कल-अफ़-व

वल-आ़फ़ि- य-त फ़िद्दीनि वद्दुनया वल आख़िरह।

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे माफ़ी और बख़शिश का चाहनेवाला हूँ और दीन व दुनिया और आख़िरत में (तुझसे) आफ़ियत (सलामती) का तलबगार हूँ।''

۱۵۰ اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِیْ رُشْدِیْ وَاَعِذْنِیْ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ ــــ(ترمذی)

(150) अल्लाहुम-म अलहिमनी रुशदी व अ-इज़्नी मिन शर्रि नफ़सी। (तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह मेरे दिल में होशमंदी और भलाई डाल दे और मुझे मेरे नफ़्स की बुराई से बचाए रख।''

۱۵۱ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْهُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰی.

ــــ(مسلم، ترمذی، ابن ماجہ)

(151) अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-कल-हुदा वत्तु-क़ा वलअ़फ़ा-फ़ वल ग़िना।

(मुसलिम, तिरमिज़ी, इब्ने माजा)

''ऐ अल्लाह मैं तुझसे हिदायत, तक़्वा, पाकबाज़ी और ग़िना (बेनियाज़ी) का चाहनेवाला हूँ ।''

١٥٢ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِيْ مِنَ النِّفَاقِ وَعَمَلِيْ مِنَ الرِّيَا وَلِسَانِيْ مِنَ الْكَذِبِ وَعَيْنِيْ مِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ (بیہقی)

(152) अल्लाहुम-म तह्हिर क़लबी मिनन-निफ़ाक़ि व अ़-मली मिनर्रिया व लिसानी मिनल कज़िबि व अ़यनी मिनल ख़िया-नति फ़इन-न-क तअ़-लमु ख़ाइ-नतल अअ़युनि व मा तुख़फ़िस-सुदूर ।

(बैहक़ी)

''ऐ अल्लाह, तू मेरे दिल को बिगाड़ से, और मेरे अमल को दिखावे से और मेरी ज़बान को झूठ से और मेरी आँख को खियानत से पाक कर दे । क्योंकि तू आँखों की खियानत को जानता है और उसे भी जो सीनों (दिलों) में छिपा होता है ।''

١٥٣ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ سَرِيْرَتِيْ خَيْرًا مِّنْ عَلَانِيَتِيْ وَاجْعَلْ عَلَانِيَتِيْ
صَالِحَةً. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ صَالِحِ مَا تُؤْتِي النَّاسَ مِنَ الْاَهْلِ
وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ غَيْرِ الضَّالِّ وَلَا الْمُضِلِّ ــــــــــــ (ترمذی)

(153) अल्लाहुम-मजअ़ल सरीरती ख़ैरम मिन अ़लानियती वजअ़ल अ़लानियती सालिहह । अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क मिन सालिहिम-मा तूतिन ना-स मिनल अहलि वल-मालि वल-व-लदि ग़ैरिज़्ज़ाल्लि व लल-मुज़िल-लि । (तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह, तू मेरे छुपे को मेरे खुले से बेहतर बना दे । और मेरे ज़ाहिर (खुले) को भी बेहतर बना । ऐ अल्लाह मैं तुझसे बेहतर चीज़ों की दरख़्वास्त करता हूँ जो लोगों को तू देता है । यानी बीवी, माल और औलाद । जो न ख़ुद गुमराह हों और न दूसरों को गुमराही में डालें ।''

۱۵۴ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ یَّنْفَعُنِیْ حُبُّهٗ عِنْدَكَ. اَللّٰهُمَّ مَا رَزَقْتَنِیْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ قُوَّةً لِّیْ فِیْمَا تُحِبُّ. اَللّٰهُمَّ مَا زَوَیْتَ عَنِّیْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ فَرَاغًا فِیْمَا تُحِبُّ ـــــــ (ترمذی)

(154) अल्लाहुम-मरज़ुक़नी हुब-ब-क व हुब-ब मयँ यन-फ़उनी हुब्बुहू इन-द-क । अल्लाहुम-म मा रज़क़्-तनी मिम्मा उहिब्बु फ़जअ़लहु कुव्वतल्ली फ़ीमा तुहिब्बु । अल्लाहुम-म मा ज़वै-त अ़न्नी मिम्मा उहिब्बु फ़ज-अ़लहु फ़राग़न फ़ीमा तुहिब्बु ।   (तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह, मुझे अपनी मुहब्बत अता कर, और उन लोगों से मुहब्बत की तौफ़ीक़ दे जिनसे मुहब्बत तेरे यहाँ मुझे फ़ायदा पहुँचाए । ऐ अल्लाह, तूने मेरी पसन्द की जो चीज़ें मुझे दी हैं उन्हें मेरे लिए तू अपनी पसन्द को अमल में लाने का ज़रिया बना । ऐ अल्लाह, मेरी पसन्द की जो चीज़ मुझसे दूर कर दी है उसको तू अपनी पसन्द के लिए यकसू हो जाने का सबब बना दे ।''

۱۵۵ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡٓ اَسۡئَلُكَ الثَّبَاتَ فِی الۡاَمۡرِ وَاَسۡئَلُكَ عَزِيۡمَةَ الرُّشۡدِ
وَاَسۡئَلُكَ شُكۡرَ نِعۡمَتِكَ وَحُسۡنَ عِبَادَتِكَ وَاَسۡئَلُكَ لِسَانًا صَادِقًا وَّ
قَلۡبًا سَلِيۡمًا وَّخُلُقًا مُّسۡتَقِيۡمًا وَّاَعُوۡذُبِكَ مِنۡ شَرِّ مَا تَعۡلَمُ وَ اَسۡئَلُكَ
مِنۡ خَيۡرِ مَا تَعۡلَمُ وَاسۡتَغۡفِرُكَ مِمَّا تَعۡلَمُ. اِنَّكَ اَنۡتَ عَلَّامُ الۡغُيُوۡبِ.

(ترمذی)

(155) अल्लाहुम-म इन्नी असअलु कस्सबा-त फ़िल अमरि व अस अलु-क अज़ी-म-तर-रुशदि व असअलु-क शुक-र नेअ़मति-क व हुस-न इबा-दति-क व अस्अलु-क लिसानन सादिक़वँ व क़लबन सलीमवँ व ख़ुलुक़म मुस्तक़ीमवँ व अऊज़ुबि-क मिन शर्रि मा तअ़लमु व असअलु-क मिन ख़ैरि मा-तअ़लमु व असतग़-फ़िरु -क मिम्मा तअ़लम । इन-न-क अन-त अ़ल्लामुल ग़ुयूब । (तिरमिज़ी)

"ऐ अल्लाह, मैं तुझसे हक़ बातों पर जमने की तौफ़ीक़ माँगता हूँ और तुझसे सच्चाई पर चलने में

पुख़्तग़ी की दरख़्वास्त करता हूँ । और मैं तुझसे तेरी नेमत का शुक्र अदा करने और तेरी बेहतर इबादत की तौफ़ीक़ माँगता हूँ और मैं तुझसे सच्ची ज़बान, पाक-साफ़ दिल और दुरुस्त अख़लाक़ की दरख़्वास्त करता हूँ । और तुझसे पनाह माँगता हूँ उन बुराइयों से जिनको तू जानता है और तलबगार हूँ तुझसे उन भलाइयों का जिनका तुझे इल्म है । और उन गुनाहों की तुझसे माफ़ी चाहनेवाला हूँ जो तेरे इल्म में हैं । यक़ीनन तू ही छुपी हक़ीक़तों को बख़ूबी जानता है ।''

(١٥٦) اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ——— (ترمذی)

(156) अल्लाहुम-म इन्ना नसअलु-क मिन ख़ै-रि

मा स-अ-ल-क मिनहु नबीयु-क मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल-ल-म व नऊ़ज़ुबि-क मिन शर्रि मस-तआ़-ज़ मिनहु नबीयु-क मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल-ल-म व अनतल-मुस्तआ़नु व अ़लैकल-बलागु व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्लाबिल्लाह ।

(तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह, हम तुझसे उन सभी चीज़ों की भलाई के लिए दरख़्वास्त करते हैं जिनकी तेरे नबी हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* ने तुझसे दरख़्वास्त की है और उन सब चीज़ों की बुराई से बचने के लिए तेरी पनाह चाहते हैं, जिनकी बुराई से बचने के लिए तेरे नबी हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* ने तुझसे दरख़्वास्त की है । और तू ही है जिससे मदद माँगी जाए । ज़रूरत पूरी करने और इंसाफ़ करने का दारोमदार तुझ ही पर है और एक हालत से दूसरी हालत में बदलना और उसकी ताक़त का मयस्सर आना अल्लाह की मदद के बिना मुमकिन नहीं ।''

١٥٧ اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِنَا وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِنَا وَاهْدِنَا سُبُلَ السَّلَامِ وَنَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ وَجَنِّبْنَا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَبَارِكْ لَنَا فِيْ اَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُلُوْبِنَا وَاَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ. وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا قَائِلِيْهَا وَاَتِمَّهَا عَلَيْنَا ——— (ابوداؤد)

(157) अल्लाहुम-म अल्लिफ़ बै-न क़ुलूबिना व असलिह ज़ा-त बैनिना वहदिना सुबुलस्सलामि व नज्जिना मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व जन्निब-नल फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिनहा व मा ब-त-न व बारिक लना फ़ी असमाइना व अबसारिना व क़ुलूबिना व अज़्वाजिना व ज़ुर्रीयातिना व तुबअ़लैना इन-न-क अनतत-तौवा-बुर्रहीम । वजअ़लना शाकिरी-न लिनिअ़-मति-क मुसनी-न बिहा क़ाइलीहा व अतिम्महा अ़लैना । (अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह, तू हमारे दिलों में उलफ़त व मुहब्बत डाल दे और हमारे आपसी ताल्लुक़ को बेहतर कर दे, और हमें सलामती की राहें दिखा और हमें अँधेरों से निजात देकर रौशनी की तरफ़ ले चल । और खुले और छुपे हर क़िस्म की बेहयाई के कामों से हमें बचा लें और हमारे लिए हमारे कानों, आँखों और हमारे दिलों और हमारी बीवियों और हमारी औलाद में बरकत दे और हम पर तवज्जोह फ़रमा । यक़ीनन तू बड़ा तवज्जोह फ़रमानेवाला, मेहरबान है । और हमें अपनी नेमतों का शुक्रगुज़ार बना और उनकी ख़ूबी और बड़ाई बयान करनेवाला बना और इन नेमतों को हमपर पूरी कर दे ।''

١٥٨ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ
مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ
مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ عَبْدُكَ وَ
نَبِيُّكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَاذَ بِهٖ عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ
اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَّاَعُوْذُ بِكَ مِنَ

النَّارِ وَمَا قَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ أَوْ عَمَلٍ وَّ أَسْئَلُكَ أَنْ تَجْعَلَ كُلَّ
قَضَاءٍ قَضَيْتَهُ لِي خَيْرًا. ــــــــ (ابن ماجہ)

(158) अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क मिनल ख़ैरि कुल्लिही आजिलिही व आजिलिही मा अ़लिमतु मिनहु व मालम अअ़लम व अऊज़ुबि-क मिनश-शर्रि कुल्लिही आजिलिही व आजिलिही मा अ़लिमतु मिनहु व मालम अअ़लम। अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क मिन ख़ैरि मा स-अ-ल-क अ़बदु-क व नबीयु-क व अऊज़ुबि-क मिन शर्रि मा आ-ज़ बिही अ़बदु-क व नबीयु-क। अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलुकल जन-न-त व मा क़र-र-ब इलैहा मिन क़ौलिन औअ़-मलिन व अऊज़ुबि-क मिनन-नारि व मा क़र-र-ब इलैहा मिन क़ौलिन औअ़-मलिवँ व अस-अलु-क अनतज-अ़-ल कुल-ल क़ज़ाइन क़ज़ैतहू ली ख़ैरा।

(इब्ने माजा)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे दुनिया और आखिरत की हर तरह की भलाई का सवाल करता हूँ । चाहे वह मेरे इल्म में हो या वह मेरे इल्म में न हो । और मैं दुनिया और आख़िरत की हर तरह की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ । चाहे उसका इल्म मुझे हासिल हो या उसका इल्म मुझे हासिल न हो । ऐ अल्लाह, मैं तुझसे उन सब चीज़ों की भलाई का चाहनेवाला हूँ जिनके चाहनेवाले तेरे बन्दे और तेरे नबी (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) हुए हैं । और मैं उन सब चीज़ों की बुराई से बचने के लिए तेरी पनाह चाहता हूँ जिनसे बचने के लिए तेरे बन्दे और तेरे नबी (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) ने तेरी पनाह चाही है । ऐ अल्लाह, मैं तुझसे जन्नत और उस क़ौल व अमल की तौफ़ीक़ चाहता हूँ जो जन्नत के क़रीब करे । और तुझसे पनाह माँगता हूँ दोज़ख़ से बचने के लिए और उस क़ौल व अमल से बचे रहने के लिए जो दोज़ख़ से क़रीब करे । और मेरी तुझसे यह दरख़्वास्त है कि मेरे बारे में तू जो फ़ैसला भी करे वह मेरे हक़ में बेहतर हो ।''

(۱۵۹) اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْاَوَّلُ لَا شَيْءَ قَبْلَكَ وَاَنْتَ الْاٰخِرُ لَا شَيْءَ بَعْدَكَ
اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ نَّاصِيَتُهَا بِيَدِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْاِثْمِ
وَالْكَسَلِ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْغِنٰى وَمِنْ فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَ
اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ ـــــــ (معجم الكبير اوسط للطبرانی)

(159) अल्लाहुम-म अनतल अव्वलु ला शैअ क़ब-ल-क व अनतल आख़िरु ला शैअ बअ़-द-क अऊज़ुबि-क मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन नासि यतुहा बि-यदि-क व अऊज़ुबि-क मिनल इसमि वल क-सलि व मिन अज़ाबिल क़बरि व मिन फ़ितनतिल ग़िना व मिन फ़ितनतिल फ़क़्रि व अऊज़ुबि-क मिनल मासमि वल मग़रम।

(मुअजमुल कबीर औसतिल लित्तिबरानी)

"ऐ अल्लाह, तू ही अव्वल है, तुझसे पहले कोई चीज़ नहीं। तू ही आखिर है, तेरे बाद कोई चीज़ नहीं। मैं हर जानदार की बुराई से, जिसकी पेशानी तेरे हाथ में

है, तेरी पनाह चाहता हूँ । मैं गुनाह और सुस्ती से और क़ब्र के अज़ाब से, ख़ुशहाली के फ़ितने से और मोहताजी की आज़माइश से तेरी पनाह चाहता हूँ और गुनाह व क़र्ज़ से तेरी पनाह चाहता हूँ ।''

पनाह माँगने की दुआएँ

١٦٠ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْقِلَّةِ وَالذِّلَّةِ
وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ ——— (ابوداؤد، نسائی)

(160) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल फ़क़्रि व अऊ-ज़ुबि-क मिनल क़िल्लति वज़्ज़िल-लति व अऊज़ुबि-क अन-अज़्लि-म औ-उज़्-ल-म ।

(अबू दाऊद, नसई)

''ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ मोहताजी (दरिद्रता) से और तेरी पनाह चाता हूँ तंगदस्ती (ग़रीबी) और ज़िल्लत (रुसवाई) से और तेरी पनाह चाहता हूँ

इससे कि मैं किसी पर ज़ुल्म करूँ या कोई मुझ पर ज़ुल्म करे।''

(١٦١) اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْٓءِ الْاَخْلَاقِ

(ابوداود، نسائی)

(161) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनश्शि-क़ाक़ि वन्नि-फ़ाक़ि व सूइल अख़लाक़।

(अबू दाऊद, नसई)

''ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बचने के लिए झगड़े और निफ़ाक़ (कपट) और बुरे अख़लाक़ से।''

(١٦٢) اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِیْعُ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْخِیَانَۃِ فَاِنَّهٗ بِئْسَتِ الْبِطَانَۃُ (ابوداود، نسائی)

(162) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल जूइ फ़इन्नहू बिअ्-सज़-ज़जीउ व अऊज़ुबि-क मिनल

ख़ियानति फ़इन्नहू बिअ-सतिल बितानतु ।

(अबू दाऊद, नसई)

"ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ भूख से बचने के लिए क्योंकि वह बुरा शरीके हाल है । और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ख़ियानत से बचने के लिए क्योंकि वह बहुत ही बुरा साथी है ।"

١٦٣ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِیْ وَشَرِّ بَصَرِیْ وَشَرِّ لِسَانِیْ وَشَرِّ قَلْبِیْ وَشَرِّ مَنِیِّیْ ________ (نسائی، ابوداؤد، ترمذی)

(163) अऊज़ुबि-क मिन शर्रि सम ई व शर्रि बसरी व शर्रि लिसानी व शर्रि क़लबी व शर्रि मनीई । (नसई, अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

"(ऐ अल्लाह) मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ अपने कान की बुराई से और अपनी ज़बान की बुराई से और अपने दिल की बुराई से और अपनी मनी (वीर्य)की बुराई से ।"

١٦٤ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعِجْزِ وَالْکَسَلِ
وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَضَلَعِ الدَّیْنِ وَغَلَبَۃِ الرِّجَالِ ـــــــ (بخاری)

(164) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल हम्मि वल ह-ज़नि वल इजज़ि वल क-सलि वल जुबनि वल बुख़लि व ज़-लइद्दैनि व ग़-ल-बतिर्रिजाल ।

(बुख़ारी)

''ऐ अल्लाह, मैं फ़िक्र व ग़म से, मजबूरी और सुस्ती से और बुज़दिली और कंजूसी से और क़र्ज़ के बोझ से और इनसानों के क़हर व ग़लबे से तेरी पनाह चाहता हूँ ।''

١٦٥ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَآءِ وَدَرْکِ الشَّقَآءِ وَسُوْٓءِ
الْقَضَآءِ وَشَمَاتَۃِ الْاَعْدَآءِ ـــــــ (بخاری،مسلم)

(165) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन जहदिल बलाइ व दरकिश-शक़ाइ व सूइल-क़ज़ाइ व शमा-त-तिल अअ़दाइ । (बुख़ारी, मुसलिम)

''ऐ अल्लाह, मैं मुसीबत की सख़्ती से और बदबख़ती की गिरिफ़्त से और तक़दीर की बुराई से और इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि दुश्मनों को मुसीबत में मुझपर हँसने का मौक़ा मिले ।''

١٦٦ اَللّٰهُمَّ اِنِّىٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مُّنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ وَالْاَعْمَالِ وَ
الْاَهْوَآءِ وَالْاَدْوَآءِ ــــــــــــــــ (ترمذی)

(166) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन मुन्करातिल अख़-लाक़ि वल अअ़मालि वल अहवाई वल अदवाई । (तिरमिज़ी)

''ऐ अल्लाह, मैं बुरे अख़लाक़ से और बुरे आमाल से और बुरी चाहतों से और बुरी बीमारियों से बचे रहने के लिए तेरी पनाह चाहता हूँ ।''

١٦٧ اَللّٰهُمَّ اِنِّىٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ
وَفُجَاءَةِ نَقْمَتِكَ وَجَمِيْعِ سَخَطِكَ ــــــــــ (مسلم، ابوداؤد)

(167) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन ज़वालि नेअ़मति-क व तहव्वुलि आफ़ियति-क व फुजाअति नक़-मति-क व जमीइ स-ख़ति-क ।

(मुसलिम, अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह, मैं पनाह माँगता हूँ, तेरी इस बात से कि तेरी दी हुई नेमत ख़त्म हो जाए और तेरी अता की हुई आफ़ियत छिन जाए और इस बात से कि तेरा अचानक अज़ाब आ जाए और तेरे हर तरह के ग़ुस्से से (तेरी पनाह चाहता हूँ) ।''

۱۶۸ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعِجْزِ وَالْکَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَالْھَرَمِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ. اَللّٰھُمَّ اٰتِ نَفْسِیْ تَقْوَاھَا وَزَکِّھَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَکّٰھَا اَنْتَ وَلِیُّھَا وَمَوْلَاھَا. اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ قَلْبٍ لَّا یَخْشَعُ وَمِنْ نَّفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ عِلْمٍ لَّا یَنْفَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَّا یُسْتَجَابُ لَھَا ——— (مسلم، نسائی، احمد)

(168) अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल इजज़ि वल क-सलि वल बुख़लि वल जुबनि वल ह-रमि व अज़ाबिल क़ब्र। अल्लाहुम-म आति नफ़्सी तक़वाहा व ज़क्किहा अन-त ख़ैरु मन ज़क्काहा अन-त वलीयुहा व मौलाहा। अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन क़लबिल ला यख़-शउ वमिन नफ़सिल ला तश-बउ व मिन इलमिल ला यन-फ़उ व मिन दअ़-वतिल ला युस्तजाबु-लहा।

(मुसलिम, नसई, अहमद)

''ऐ अल्लाह, मैं बेबसी, आलस, कंजूसी, बुज़दिली, बुढ़ापे की कमज़ोरी और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ अल्लाह मेरे नफ़्स को उसका तक़वा (परहेज़गारी) अता कर और उसे तरक़्क़ी दे, तू वह सबसे बेहतर हस्ती है जो उसे तरक़्क़ी दे। तू ही उसकी निगरानी करनेवाला और मालिक है। ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ऐसे दिल से जो गिड़गिड़ाए नहीं,

ऐसे नफ़्स से जो तृप्त न हो और ऐसे इल्म से जो नफ़ा न दे और ऐसी दुआ से जो क़बूल न की जाए ।''

(۱۶۹) اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ ـــــــ (بخاری، مسلم، نسائی)

(169) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन अज़ाबिल क़बरि व अऊज़ु-बि-क मिन अज़ाबिन्नारि व अऊज़ु-बि-क मिन फ़ित-नतिल महया वल ममाति व अऊज़ु-बि-क मिन शर्रिल मसीहिद-दज्जाल ।

(बुख़ारी, मुसलिम, नसई)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और तुझसे पनाह माँगता हूँ दोज़ख़ के अज़ाब से और तुझसे पनाह माँगता हूँ ज़िन्दगी और मौत की आज़माइश से और तुझसे पनाह चाहता हूँ मसीह दज्जाल की बुराई से ।''

(١٧٠) اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُرَدَّ اِلٰی اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ——————(بخاری، ترمذی، نسائی)

(170) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु-बि-क मिनल बुख़लि व अऊज़ु-बि-क मिनल जुबनि व अऊज़ु-बि-क मिन-अन उरद-द इला अर-ज़लिल उमुरि व अऊज़ु-बि-क मिन अज़ाबिल क़ब्र ।

(बुख़ारी, तिरमिज़ी, नसई)

''ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ कंजूसी से और तेरी पनाह माँगता हूँ बुज़दिली और कम हिम्मती से, और तेरी पनाह माँगता हूँ नाकारा उम्र से और तेरी पनाह माँगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से ।''

(١٧١) اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ التَّرَدِّیْ وَمِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ وَالْهَرَمِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ یَّتَخَبَّطَنِی الشَّیْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِیْلِكَ مُدْبِرًا وَّاَعُوْذُ

بِكَ مِنْ اَنْ اَمُوْتَ لَدِيْغًا ـــــــــــــ (ابوداؤد، نسائی، احمد)

(171) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु-बि-क मिनल हदमि व अऊज़ु-बि-क मिनत तरद्दी व मिनल ग़-रक़ि वल ह-रक़ि वल ह-रमि व अऊज़ु-बि-क मिन अयँ य-त-ख़ब-ब-तनियश शैतानु इन्दल मौति व अऊज़ु-बि-क मिन अन अमू-त फ़ी सबीलि-क मुदबिरवँ व अऊज़ु-बि-क मिन अन अमू-त लदीग़ा ।

(अबू दाऊद, नसई, अहमद)

''ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ दबकर हलाक होने से, और तेरी पनाह माँगता हूँ गिरकर, डूबकर और जलकर मरने से और इनतिहाई बुढ़ापे से । और तेरी पनाह माँगता हूँ इससे कि शैतान मौत के वक़्त मुझे बदहवास कर दे । और तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि मैं तेरे रास्ते में जिहाद के मैदान से पीठ फेरकर मरूँ । और तेरी पनाह माँगता हूँ इससे कि तकलीफ़ देनेवाले (जीव) के डसने से मेरी मौत आए ।''

(١٧٢) اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَالَمْ اَعْمَلْ.

(مسلم، ابوداؤد، نسائی)

(172) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु-बि-क मिन शर्रि मा अ़मिलतु व मिन शर्रिमा लहू अअ़मल।

(मुसलिम, अबू दाऊद, नसई)

''ऐ अल्लाह, जो अमल मैंने किया उसकी बुराई से और जो नहीं किया उसकी बुराई से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ।''

(١٧٣) اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغِنٰى وَشَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ. اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَایَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِیْ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِیْ وَبَيْنَ خَطَايَایَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ.

(بخاری، مسلم، ابو داؤد)

(173) अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु-बि-क मिन अ़ज़ाबिन नारि व फ़ित्नतिन नारि व फ़ित्नतिल-क़बरि व अ़ज़ाबिल क़बरि व शर्रि फ़ित्नतिल ग़िना व शर्रि फ़ित्नतिल फ़क़्रि व मिन शर्रि फ़ित्नतिल मसीहिद-दज्जाल। अल्लाहुम-मग़ासिल ख़ताया-य बिमा इस्सलजि वल ब-रदि व नक़्क़ि क़लबी मिनल ख़ताया कमा युनक़्क़स -सौबुल अब-यज़ु मिनद-द-नसि वबाइद बैनी व बै-न ख़ताया-य कमा बाअ़त-त बैनल मशरिक़ि वल मग़रिब।

(बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद)

''ऐ अल्लाह, मैं तुझसे पनाह चाहता हूँ आग के अज़ाब से और आग की आज़माइश से और क़ब्र की आज़माइश से और क़ब्र के अज़ाब से, और मालदारी की आज़माइश की बुराई से और ग़रीबी की आज़माइश की बुराई से और मसीह दज्जाल की आज़माइश की बुराई से। ऐ अल्लाह, धो दे मेरे गुनाह बर्फ़ के और ओले के पानी

से, और गुनाहों से मेरे दिल को ऐसा पाक कर दे जैसे सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़-सुथरा कर दिया जाता है। और मेरे और मेरे गुनाहों के बीच ऐसी दूरी पैदा कर दे जैसी दूरी तूने पूरब और पश्चिम के बीच रख दी है।''

मग़फ़िरत की दुआएँ

١٧٤ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ ——— (آل عمران : ١٤٧)

(174) रब्बनग़-फ़िरलना ज़ुनूबना व इसराफ़ना फ़ी अमरिना व सब्बित अक़दामना वनसुरना अ़लल क़ौमिल काफ़िरीन। **(कुरआन, 3:147)**

''हमारे रब, तू हमारे गुनाहों को और जो ज़्यादती हमारे अपने मामले में हमसे हुई हो उसे माफ़ कर दे और हमारे क़दम जमाए रख और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबिले में तू हमें कामयाबी अता कर।''

١٧٥ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝ (ابراہیم: ۴۰، ۴۱)

(175) रब्बिज अ़लनी मुक़ीमस सलाति व मिन ज़ुर्रीयती रब्बना व तक़ब्बल दुआ़इ । रब्बनग़-फ़िरली वलिवालिदै-य व लिलमोमिनी-न यौ-म यक़ूमुल-हिसाब । (क़ुरआन, 14:40-41)

''मेरे रब, मुझे ऐसा कर कि मैं नमाज़ का एहतिमाम करूँ और मेरी औलाद को भी यह तौफ़ीक़ दे । हमारे रब, और हमारी दुआ क़बूल कर ले । हमारे रब, मुझे और मेरे माँ-बाप को और मोमिनों को उस दिन बख़्श देना जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा ।''

١٧٦ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۝ (الاعراف : ۲۳)

(176) रब्बना ज़लम्ना अनफ़ु-सना व इल्लम

तग़फ़िर लना व तर-हमना ल-नकूनन-न मिनल ख़ासिरीन। **(क़ुरआन, 7:23)**

"हमारे रब, हमने अपने आपपर ज़ुल्म किया, अब अगर तूने हमें माफ़ न किया और हमपर रहम नहीं किया तो फिर तो हम घाटे में रहनेवाले होंगे।"

١٧٧ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ○ (المؤمنون : ١١٨)

(177) रब्बिग़-फ़िर वरहम व अन-त ख़ैरुर राहिमीन। **(क़ुरआन, 23:118)**

"मेरे रब, मुझे बख़्श दे और रहम कर, तू तो सबसे बेहतर रहम करनेवाला है।"

١٧٨ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○
(التحريم : ٨)

(178) रब्बना अतमिम-लना नू-रना वग़फ़िर-लना, इन-न-क अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।

(क़ुरआन, 66:8)

''हमारे रब, हमारे लिए हमारे नूर को कामिल कर दे और हमारी मग़फ़िरत फ़रमा, यक़ीनन तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है।''

(179) رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا
إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ
لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ (البقرہ: ۲۸۶)

(179) रब्बना ला तुआख़िज़ना इन नसीना औ अख़्-ताना रब्बना वला तहमिल अ़लैना इसरन कमा हमल-तहू अ़लल्लज़ी-न मिन क़ब्लिना, रब्बना व ला तुहम्मिलना माला ता-क़-त-लना बिही, वअ़फु-अ़न्ना वग़फ़िरलना वर-हमना अन-त मौलाना फ़नसुरना अ़लल-क़ौमिल-काफ़िरीन। (कुरआन, 2:286)

''हमारे रब, अगर हम भूल जाएँ या चूक जाएँ तो हमारी पकड़ न करना। हमारे रब, हमपर ऐसा बोझ न

डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था । हमारे रब, और हमसे वह बोझ न उठवा जिसकी हमें ताक़त नहीं । और हमें माफ़ कर दे और हमें बख़्श दे और हमपर रहम कर, तू ही हमारा मौला है, लिहाज़ा हमारी मदद करके हमें काफ़िर लोगों पर ग़ालिब कर।''

١٨٠ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ (مسلم، احمد)

(180) अल्लाहुम्मग़-फ़िरली वर-हमनी वहदिनी व आफ़िनी वरज़ुक़नी । (मुसलिम, अहमद)

''ऐ अल्लाह, मेरी मग़फ़िरत कर, मुझपर रहम कर, मुझे हिदायत दे और मुझे सलामत रख और मुझे रोज़ी दे ।''

١٨١ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ.

(ابوداؤد، ترمذی)

(181) असतग़-फ़िरुल्ला-हल्लज़ी ला-इला-ह

इल्ला-हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैह ।

(अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

''मैं माफ़ी चाहता हूँ उस अल्लाह से, जिसके अलावा कोई माबूद (इबादत के लायक़) नहीं । जो ज़िन्दा-जावेद, कायनात की निगरानी और इन्तिज़ाम करनेवाला है और मैं उसी की तरफ़ पलटता हूँ ।''

١٨٢ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَارْضَ عَنَّا وَتَقَبَّلْ مِنَّا وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ
وَنَجِّنَا مِنَ النَّارِ وَاَصْلِحْ لَنَا شَاْنَنَا كُلَّهٗ (احمد)

(182) अल्लाहुम्मग़-फ़िरलना वर-हमना वर-ज़ अ़न्ना व तक़ब्बल मिन्ना व अदख़िल नल जन-न-त व नज्जिना मिनन्नारि व असलिह-लना शा-नना कुल्लहू । (अहमद)

''ऐ अल्लाह, तू हमें माफ़ कर दे और हमपर रहम कर, और हमसे राज़ी हो जा । और हमारी दुआ क़बूल कर, और हमें जन्नत में दाख़िल कर दे । और दोज़ख से

हमें बचा ले, और हमारे सारे कामों को सँवार दे ।''

۱۸۳ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ. (ترمذی، ابن ماجہ، احمد)

(183) अल्लाहुम-म इन-न-क अ़फ़ुव्वुन तुहिब्बुल अ़फ़-व फ़अ़फ़ु अ़न्नी ।

(तिरमिज़ी, इब्ने माजा, अहमद)

''ऐ अल्लाह, तू बहुत माफ़ करनेवाला है, और माफ़ी को पसन्द करता है तो मुझे माफ़ कर दे ।''

۱۸۴ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ خَطِیْٓئَتِیْ وَجَهْلِیْ وَاِسْرَافِیْ فِیْٓ اَمْرِیْ وَمَآ اَنْتَ
اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ هَزْلِیْ وَجِدِّیْ وَخَطَآءِیْ وَعَمَدِیْ
وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِیْ. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَآ اَخَّرْتُ وَمَا
اَسْرَرْتُ وَمَآ اَعْلَنْتُ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ
الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ــــــــــ (بخاری، مسلم)

(184) अल्लाहुम्मग़-फ़िरली ख़तीअती व जहली

व इसराफ़ी फ़ी अमरी व मा अन-त अअ़लमु बिही मिन्नी, अल्लाहुम्मग़-फ़िरली हज़्ली व जद्दी व ख़ताई व अ़मदी व कुल्लू ज़ालि-क इनदी । अल्लाहुम्मग़-फ़िरली मा क़द्दमतु व मा अख़्ख़रतु व मा अस्ररतु व मा अअ़-लन्तु व मा अन-त अअ़-लमु बिही मिन्नी अनतल मुक़द्दिमु व अनतल मुअख़्ख़िरु व अन-त अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर ।

(बुख़ारी, मुसलिम)

''ऐ अल्लाह, बख़्श दे मेरे गुनाह, मेरी नादानी और अपने काम में मुझसे जो ज़्यादती हुई हो उसको और उस गुनाह को जिसको तू मुझसे ज़्यादा जानता है । ऐ अल्लाह, बख़्श दे जो गुनाह मैंने हँसी-मज़ाक़ में किए हों या संजीदगी से किए हों और जो भूलकर किए हों या जान-बूझकर किए हों और उनमें से हर एक का मैं दोषी हूँ । ऐ अल्लाह माफ़ कर दे जो गुनाह मैंने पहले किए हों और जो बाद में किए हों और जो छिपाकर किए हों और

जो खुले तौर पर किए हों और वे गुनाह जिनको तू मुझसे कहीं ज़्यादा जानता है । तू ही आगे करनेवाला है, तू ही पीछे करनेवाला है और तुझे हर चीज़ पर पूरी कुदरत हासिल है ।''

सय्यिदुल इसतिग़फ़ार

सुबह-शाम पढ़ें :

(١٨٥) اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا
عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا صَنَعْتُ
اَبُوْٓءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْٓءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ
اِلَّآ اَنْتَ ——— (بخاری)

(185) अल्लाहुम-म अन-त रब्बी ला-इला-ह इल्ला अन-त ख़-लक़-तनी व अना अ़ब्दु-क व अना अ़ला अ़हदि-क व वअ़-दि-क मस-त-तअ़-तु व अऊ़ज़ु-बि-क मिन शर्रि-मा स-नअ़-तु अबूउ ल-क

बि-निअ़-मति-क अ़लै-य व अबूउ बि-ज़ंमबी फ़ग़फ़िरली फ़इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त ।

(बुख़ारी)

"ऐ अल्लाह, तू मेरा रब है, तेरे अलावा कोई माबूद नहीं । तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और अपनी ताक़त-भर तेरे अहद व तेरे वादे पर जमा हुआ हूँ । मैं उसकी बुराई से बचने के लिए तेरी पनाह चाहता हूँ जो कुछ मैंने किया, तेरे आगे तेरे उस एहसान को क़बूल करता हूँ जो तूने मुझपर किया है और मुझे अपने गुनाह का इक़रार है । तो तू मुझे माफ़ कर दे । तेरे अलावा कोई नहीं जो गुनाहों को माफ़ करे ।"

तसबीह व तहमीद

(١٨٦) سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ. (بخاری)

(186) सुब्हानल्लाहि व बि-हमदिही, सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम । **(बुख़ारी)**

"अज़मत व बड़ाई अल्लाह की, तारीफ़ के लायक़ वही है। अज़मत व बड़ाई अल्लाह अज़ीम ही के लिए है।"

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَوَّلًا وَّاٰخِرًا وَّصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ.

अलहम्दु लिल्लाहि अव्वलवँ व आख़िरवँ व सल्लल्लाहु अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अ़ला आलिही व सहबिही व सल्लम।

"पहली और आख़िरी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है और रहमत और अनुकंपा हो अल्लाह की हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर और आपके अहलो अयाल पर और आपके साथियों पर और सलामती हो सबपर।"